चन्दामामा
जनवरी १९८९
३ रु

राम और श्याम

अनजान आदिवासियों की नगरी में

डायमंड कॉमिक्स में
मनोरंजन ही मनोरंजन
नये डायमंड कॉमिक्स
राजू की कार
अंकुर और अद्भुत खज़ाना
मामा भांजा और जादू की गुफा
मोटू पतलू और अनमोल खज़ाना
फौलादी सिंह और इन्द्रजाल
पलटू और भयानक कुत्ता
डायमंड मिनी कॉमिक्स
चाचा भतीजा और अपाहिज वानर
राजन इकबाल और वैज्ञानिक का अपहरण
विक्रम बेताल और चमत्कारी तालाब
फौलादी सिंह और रहस्यमयी राजकुमारी
डायमंड डाइजेस्ट में
बेताल कथाएं-5
महाभारत
यदि आप टी०वी० सीरियल महाभारत का सम्पूर्ण आनन्द लेना चाहते हैं तो पढ़िए
डायमंड पाकेट बुक्स में
कपिल देव
क्रिकेट कैसे खेलें
क्रिकेट वर्ल्ड कप
डायमंड कॉमिक्स में
चाचा चौधरी और राका से मुठभेड़
400 वां अंक
चाचा चौधरी और राका से मुठभेड़
खूंखार राका फिर आ गया है। उसने वैदराज चक्रमाचार्य की अद्भुत दवाई पी रखी है, जिससे वह मर नहीं सकता। उसके अत्याचार और तबाही से चारों तरफ कोहराम मचा है। कम्प्यूटर से तेज दिमाग वाले चाचा चौधरी और शक्तिशाली साबू के सामने राका एक चुनौती बनकर खड़ा है। इस भिड़ंत में कौन जीता? कौन हारा? पढ़िए एक्शन से भरपूर इस नयी कॉमिक्स में।
डायमंड कॉमिक्स प्रा. लि.
2715, दरियागंज, नई दिल्ली-110002

प्यारे दोस्तों,

लो आ गये हम फिर ! मेरे नन्हे साथियों, ट्राई मी, कोकोनट क्रीम और लॉलीपॉप के साथ इस महीने हम तुम्हारे लिए लेकर आए हैं पहले से भी ज़्यादा मौज मस्ती का ख़ज़ाना. एक जादुई करिश्मा, कठपुतली बनाने की तरकीब और कुछ, सचमुच की आश्चर्यजनक मज़ेदार बातें ! अब तो सब का बांध टूटता दिखाई दे रहा है... तो चलो शुरू हो जाएं !

THE KING OF SWEETS

आओ, एक कठपुतली बनाएं !

FIG. 1

स्टेपलर या टेप से दोनों प्लेटों को जोड़ दो लेकिन थोड़ी जगह छोड़कर (जैसा चित्र 1 में दिखाया गया है) ताकि तुम्हारा हाथ उसमें आसानी से घुस सके. ध्यान रहे यह खुला हिस्सा नीचे की ओर ही हो. अब प्लेट के एक तरफ (जैसा चित्र 2 में दिखाया गया है) रंगों की सहायता से चेहरा बनाओ. बालों की जगह थोड़ा सा फ़ेवीकॉल लगा कर ऊन या रुई चिपका दो. बस, हो गयी तुम्हारी कठपुतली तैयार ! अब खुले हिस्से के ज़रिए अपना हाथ कठपुतली के अन्दर घुसाओ और चारों ओर घुमाते हुए कठपुतली जैसी आवाज़ बनाकर बोलो. आया न मज़ा? इसके अलावा अगर चाहो तो अपने दोस्तों के साथ मिल कर एक और मनपसंद खेल भी खेल सकते हो—कठपुतलीवाला

OPEN

FIG. 2

मज़ेदार नाटक. इसके लिए जितनी चाहो उतनी कठपुतलियां बना लो. लेकिन चेहरे सबके अलग-अलग तरह के होने चाहिए. अब इन चेहरों के आधार पर एक हंसाने हंसाने वाली मनोरंजक कहा... तैयार कर लो. सारी की सारी कठपुतलियों को ... नाटक का पात्र बना दो और अभिनय (हाथ घुमा... संवाद उनकी जगह तुम व तुम्हारे दोस्त बोल सकते... है ना मज़ेदार खेल !

जरूरी सामान :
- 2 पेपर प्लेट
- स्टेपलर या सेलोटेप
- थोड़ा सा पुराना ऊन या रुई
- गोंद (फ़ेवीकॉल हो तो अच्छा है)
- पेन्ट या फेल्ट पेन या क्रेयॉन

जानते हो?

क्या तुम जानते हो कि मक्खियां और तितलियां अपने पैरों से स्वाद पता कर सकती हैं?

पैरीज़ गोलियां और

मैं, तम्हें बताने वाली हूं एक रहस्य की बात...

गुप्त लिखाई!

ज़रूरी सामान :
– साफ़ निकलता एक फाउंटेन पेन
– आधा ताज़ा नींबू
– एक कप (प्याला)
– लिखने के लिए सफ़ेद कागज़

कप में नींबू का रस निचोड़ लो. पेन की निब को नींबू के रस में डुबो कर स्याही की तरह इस्तेमाल करते हुए सफ़ेद कागज़ पर लिखो. तुम्हारी लिखाई तब तक अदृश्य रहेगी जब तक कागज़ टेबिल लैम्प जैसी किसी गर्म चीज़ के ऊपर नहीं रखा जायेगा. कागज़ के गर्म होने पर ही शब्द दिखाई देंगे. अगर चाहो तो यह एक मज़ेदार पार्टी गेम बन सकता है. अपने व अपने एक साथी के बीच इस रहस्य को गुप्त रखो. दोस्त को दूसरे कमरे में भेज दो (उस कमरे में टेबिल लैम्प ज़रूर हो). और अपने पास नींबू, पेन व कागज़ तैयार रखो. अब अपने अन्य दोस्तों से कहो कि वेह कोई शब्द बोलें.
दूसरे कमरे में बैठा तुम्हारा साथी खाली कागज़ देख कर बता सकता है कि वह शब्द क्या है चुपचाप होशियारी से छुपाकर नींबू के रस से वह शब्द तुम कागज़ पर लिख दो और अपने साथी के पास भेज दो (लिखने के बाद चाहो तो खाली कागज़ निरीक्षण के लिए भी दे सकते हो). जैसे ही तुम्हारा साथी उस कागज़ को लैम्प के ऊपर गर्म करेगा वैसे ही शब्द दिखाई दे जायेगा! है न कमाल!

GUESS WHAT?

क्या सच्चे दोस्त बनना चाहते हो?

मैं व मेरे नन्हे साथी तुम्हारे बारे में सब कुछ जानना चाहते हैं, इसलिए अपना नाम, पता, उम्र व जन्मदिन एक पोस्टकार्ड पर लिख कर हमारे पास भेज दो. साथ ही यह भी लिखना कि पैरीज़ पेज में तुम्हें सबसे अच्छा क्या लगता है, तथा हम इसमें तुम्हारे लिए और क्या बढ़ा सकते हैं

चींटी से ज़्यादा ताकतवर कौन है?

क्या तुम मान सकते हो कि एक चींटी आदमी से ज़्यादा बोझा उठा सकती है? परन्तु यह सच है। एक साधारण आदमी अपने वज़न से थोड़ा ज़्यादा बोझा उठा सकता है. लेकिन चींटी अपने वज़न से 50 गुणा अधिक बोझा उठा सकती है।

Write to:
PARRYS THE KING OF SWEETS
P.O. BOX 2040
MADRAS 600 001.

THE KING OF SWEETS

HTA 7066

बिस्किट, हर कोई चाहे.

LCD GAME SERIES

DRAMATIC TECHNOLOGY **CASIO**

THRILLS! SPILLS! ADVENTURE!

CG-410
GUERRILLA WARFARE

CG-420
WESTERN SHERIFF

CG-430
JET STAR

CG-128
LOVELY ANGEL

CG-129
CROCODILE PANIC

CG-130A
RABBIT FARM

For further information and contact

India : **Thakral Computers (P) Ltd.**
117/118, Dalamal Tower, 211, Nariman Point, Bombay-400 021. Tel : 2871340, 232104. Telex : 011-2937

Singapore : **THAKRAL EMPORIUM (S) PTE. LTD.**
77 High Street #01-06, High Street Plaza, Singapore 0617
Tel : 3379338 (8 lines) Telex : THAKRAL RS 23884

Hong Kong : **ONFLO MARKETING CO., LTD.,**
2/F Hotel Miramar, 118-130 Nathan Road,
Tsim Sha Tsui Kowloon Hong Kong
Tel : 3-7967131 Fax : (852)-3-7966917
Tlx : 55858 ONFLO HX Cable : ONFLOTRON HONG KONG

Nepal : **RAINBOW PHOTO-FINISHERS PTE. LTD.**
Gopalsal Punahchamal P.O.Box 772 Kathmandu, Nepal
Tel off. 2-24589, 2-24074 Tlx 2339 GRPL NP

U.A.E. : **JUMBO ELECTRONICS CO LTD.**
Jumbo House P.O. Box 3426 Dubai
Tel : 422555 (15 lines) Telex : 45845 JECOL EM

Saudi Arabia : **MAHMOOD SALEH ABBAR CO.**
Head Office Jeddah - Saudi Arabia - P.O. Box 461-JEDDAH 21411
Tel : 6512764/6512768 Telex : 601790 ABARJD SJ

Oman : **ARABIAN CAR MARKETING CO., LTD.**
P.O. 4305 RUWI Sultanate of Oman Tel : 793741 To 50 Telex : 3585 BAHWAN ON

CASIO COMPUTER CO., LTD.
Tokyo, Japan

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

आत्मस्तुति और दूसरों की निन्दा मनुष्य-मात्र के लिए दुर्गुण माने जाते हैं। परोपकार की भावना, प्रलोभन से दूर रहना-ये मानव-मात्र के लिए स्वाभाविक गुण बन जाने चाहिए। लेकिन कुछ लोग केवल दूसरों से प्रशंसा पाने के लिए अपने को अत्यंत उदार और अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखनेवाले आदमी जैसे दिखाते हैं। 'पिशचिनियों की शंका' कहानी द्वारा इस बातका प्रमाण हम को मिलता है।

अमर वाणी

उत्तमे तु क्षणं कोपो, मध्यमे घटिकाद्वयम्।
अधमे स्याद होरात्रमु, चाण्डाले मरणांतिकम्।

उत्तम व्यक्ति का क्रोध क्षणिक होता है, मध्यम गुणवाले व्यक्ति का क्रोध एक या दो घंटे टिकता है, अधम व्यक्तिका क्रोध एक दिन और एक रात-इतने समय तक रहता है। मगर नीच व्यक्ति का क्रोध जीवन के अंत तक टिकता है।

वर्ष : ४१ जनवरी १९८९ अंक : ५

एक प्रति : ३.०० वार्षिक चन्दा : ३६.००

जेम्स बॉन्ड के धमाकेदार कारनामें

मौन का मूल्य

मंगापुरम् का जमीन्दार बहुत वाचाल और साथ ही शीघ्र कोपी था। इसलिये कोई भी उसे कोई बात समझाने का साहस नहीं कर पाता था।

एक दिन ज़मीन्दार अकेला ही टहलने के लिए निकला। गाँव के छोर पर एक सुन्दर पहाड़ था। पहाड़पर चढ़ने की उसकी इच्छा हुयी। पहाड़ की तलहटी में उसे एक गड़रिया दिखाई दिया। जमीन्दार ने उसे साथ चलने को कहा और खुद आगे बढ़ा।

गड़रिया चुपचाप तेज क़दम चढ़ रहा था इसलिए वह कुछ आगे निकल गया। ज़मीन्दार मुँह से बात करता हुआ चढ़ता रहा। थोड़ी ही देर में वह पिछड़ गया और थक कर एक शिलापर बैठ गया।

गड़रिया, जो भोलाभाला था, एकदम बोल उठा, "अजि, मौन धारण करने पर आदमी बिना थकावट के पहाड़ चढ़ सकता है।"

उसी समय ज़मीन्दार समझ सका कि न केवल पहाड़ चढ़ने के लिए, बल्कि अपनी ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए भी आदमी को ज़्यादा बकवास करना ज़रुरी नहीं है। वह अब मौन का मूल्य समझ गया और लोगों में 'मितभाषी' कहलाया।
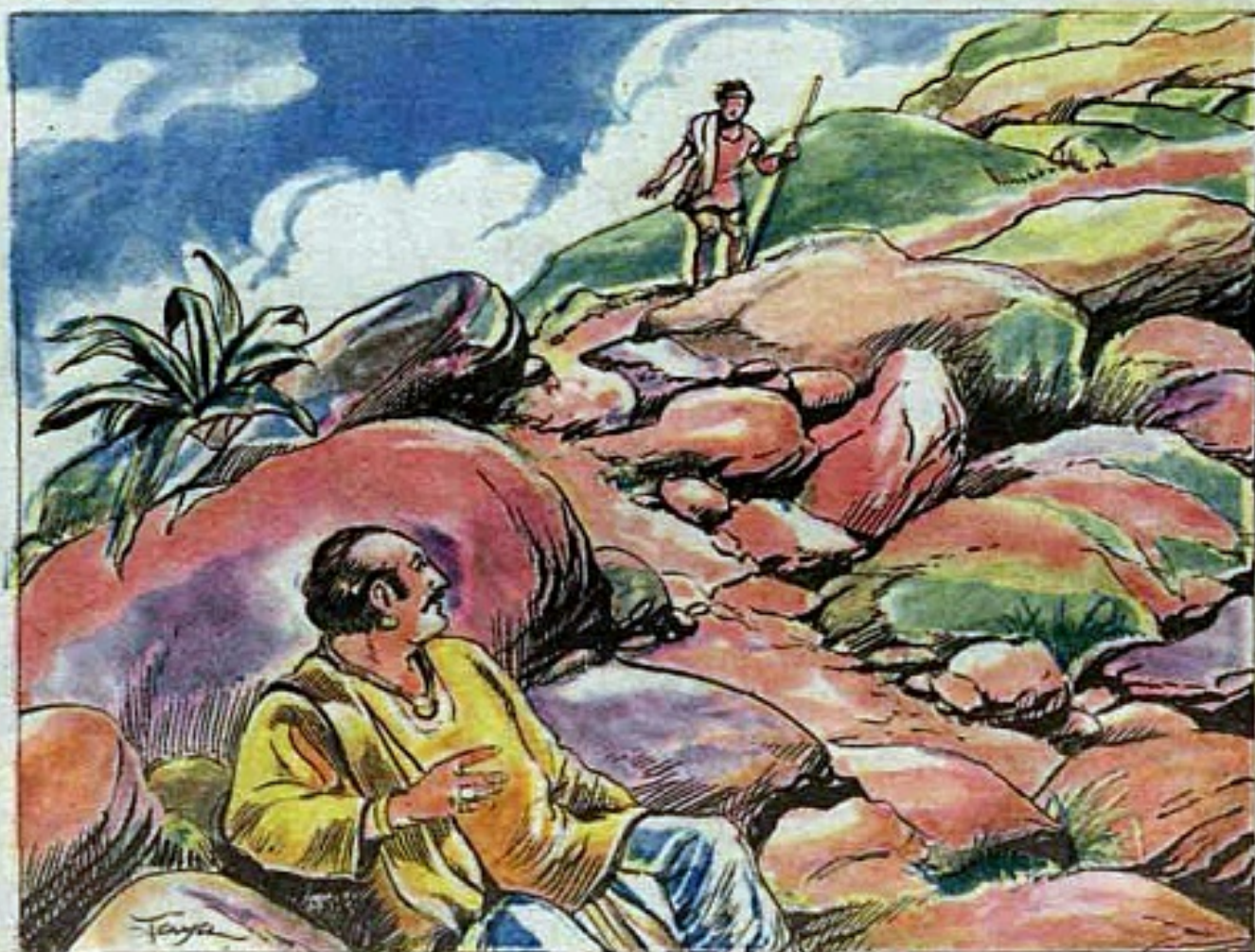
आप भला जग भला

केवटपुर एक बहुत बड़ा गाँव था । रामदुलारे नाम का एक आदमी वहाँ रहता था । उसके बाप का देहान्त हो गया थ, माँ जीवित थी । वह था बड़ा मेहनती मगर स्वभाव से कुछ गरम मिजाज़ वाला था । उसकी माँ उसे बहुत समझाया करती थी कि,- "बेटा, एक कहावत है-आप भला, जग भला । तुम दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करो, तो तुम्हें उसका अच्छा ही फल मिलेगा। लोगों को ज़्यादा अकड़ दिखाओ तो वह भी भुगतना पड़ेगा ।"

रामदुलारे का उसपर टका सा जवाब रहता, "मैं जब कड़ी मेहनत करके अपना पेट पालता हूँ, तो दूसरों की धौंस क्यों सहन करूँ?"

एक दिन उस गाँव के पटवारी ने रामदुलारे को बुलवाकर कहा, "सुनो, मेरे पिताज़ी बहुत वृध्द हो चुके हैं । उनकी देखभाल के लिए दिन-रात एक आदमी की ज़रूरत है । तुम तो जानते हो कि खुद मुझे पलभर की भी फुरसत नहीं होती । मेरा बड़ा बेटा खेती-बाड़ी का काम देखता है, दूसरा बेटा अभी पढ़ रहा है और मेरी दोनों बेटियाँ संगीत सीख रही हैं । रही मेरी पत्नी, वह तो घर-गृहस्थी और रसोई के काम में लगी रहती है । इसलिए अगर तुम मेरे पिताजी की देखभाल और सेवासुश्रूषा करना मान जाओ तो मैं तुम्हें मासिक पाँच सौ रुपये तनख़्वाह दूँगा, समझे?"

रामदुलारे के वैसे दिन-भर कड़ी मेहनत करने पर भी, मासिक दो सौ रुपयों से अधिक हाथ नहीं आते थे । उसके घर हट्टे-कट्टे बैलों का एक जोड़ा था । रामदुलारे का काम था-इन बैलों की मदद से हल जोतना और बोझ खिचवाना । इस काम से उसे आमदनी

कम होती थी, फिर भी वह उसी में अपनी प्रतिष्ठा देखता । लोगों के घर नौकर रहकर ज़्यादा पैसा पाने से भी अपना यह स्वतन्त्र काम उसे ज़्यादा पसन्द था ।

उसने पटवारी से कहा, ''अजी सुनिये, पिताजी की सेवा करने का आप को जो मौका मिल रहा है, उस से आप क्यों वंचित होना चाहते हैं? मेरी नज़र में तो यह बड़े ही पुण्य का काम है । क्यों आप अपने पिता की सेवा के लिए नौकर रखना चाहते हैं । आप को शायद यह भले ही अच्छा लगे, मगर मुझे यह सब बिलकुल अच्छा नहीं लग रहा ।'' यूँ कहकर रामदुलारे वहाँ से चला गया ।

उसी दिन शाम को गाँव के पटेल ने रामदुलारे को अपने घर बुलवाकर समझाया ''देखो, कल मेरे पिताजी का श्राध्द-कर्म है । मैं ने भारी पैमाने पर दावत का इन्तज़ाम किया है और अचानक रसोइया बीमार हुआ है । वह फिर भी पास रहकर सारे काम करवा लेने के लिए तैयार है । तुम्हें केवल भात का माँड निकालने में मदद देनी है, तुम कबूल करोगे तो मैं तुम्हें इस एक दिन के सौ रुपये दे दूँगा । क्या तुम राज़ी हो?''

पटेल की बातें सुनकर रामदुलारे झल्ला उठा । वह बोला, ''मैं खेती- बाड़ी करनेवाला किसान हूँ । मैं कोई रसोइया नहीं हूँ । मेरे शरीर में जितनी ताकत है उतनी तो आप के बेटों के शरीर में भी है । तो क्या एक दिन के लिए वे यह काम नहीं कर सकते?'' इतना कहकर रामदुलारे ने वहाँ से भी मुँह मोड़ लिया ।

इसके बाद उसी गाँव के जमींदार ने एक बार रामदुलारे को पानी भरने के लिए कहा, वैद्य ने दवा पीसने को कहा और एक धनी आदमी ने अपने घर का पिछवाड़ा साफ़ करने को कहा । रामदुलारे ने सब को मुँह-तोड जवाब दिया और घर जाकर मन ही मन में सब को कोसता हुआ दुबक कर बैठ गया ।

उसी वक्त उसकी माँ ने आकर उससे कहा, ''बेटा, तुम्हारे मामा ने कहला भेजा है कि उन्हें हमारे बैलों की सख़्त ज़रूरत है । तुम अभी बैलों को गाड़ी में जोत कर चले जाओ ।''

रामदुलारे के मामा अपने भानजे से व उसके बैलों से भी बहुत प्यार करते थे । साथ

ही वे अपनी बेटी का ब्याह रामदुलारे से कराना चाहते थे। रामदुलारे भी अपने मामा का बहुत आदर करता था। अपनी होनेवाली वधू को देखने की लालसा लिए तुरन्त वह बैलगाड़ी लेकर घर से निकल पड़ा।

वह पड़ोस गाँव की सीमा पर पहुँचा ही था कि, एक दृढ़काय व्यक्ति ने उसकी गाड़ी को रोका और उसे गाड़ी से उतरने को ललकारा। रामदुलारे ने गाड़ी से उतरकर पूछा, "बताओ, मुझे अपनी गाड़ी से उतरने को कहनेवाले तुम कौन हो?"

दृढ़काय व्यक्ति ने उसको ढकेल दिया और गाड़ी पर खुद सवार होकर बोला, "यह गाड़ी अब मेरी है।"

रामदुलारे उस व्यक्ति से जूझना चाहता था, लेकिन थोड़ी दूर पर खड़ा एक व्यक्ति गरजकर बोला, "मैं समीप के गाँव का मुखिया हूँ। नहीं जानते वह कौन है? अब तुम चुपचाप अपना रास्ता नाप लो। समझें?"

दृढ़काय व्यक्ति गाड़ी लेकर बड़े गर्व से गाँव की ओर चल पड़ा और बेचारा रामदुलारे असहाय होकर पैर घसीटते- घसीटते अपने मामा के घर पहुँचा। उसने मामा को सारी कहानी सुनायी।

"वह तो पहलवान मल्लवर्मा होगा। इन दिनों उसकी करतूतों की कोई हद नहीं रही।" रामदुलारे के मामा ने कहा।

"मामाजी, मेरे बैलों की जोड़ी और गाड़ी मेहरबानी करके वापस दिला दीजिये न।" रामदुलारे ने बड़ी दीनतापूर्वक याचना की।

"बेटे, यह काम हम से नहीं हो सकेगा। वह बड़ा खतरनाक आदमी है। यदि हम

उसके मुँह लगे तो हमें वह खतम कर देगा ।" रामदुलारे के मामा ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया ।

"क्या इस गाँव में कोई बुजुर्ग नहीं? अगर किसी के साथ अन्याय हो जाता है तो उस को रोकने वाला कोई नहीं?" रामदुलारे ने पूछा ।

"क्यों नहीं? कई लोग हैं, मगर दरअसल बात यह है कि मल्लवर्मा उद्दण्ड जरूर है, लेकिन इन सब बुजुर्गों के साथ उसका व्यवहार बड़ा ही मीठा होता है । वह इन सब के आदेशों का पालन करता है । इसलिए तो उसकी पाँचों उँगलियाँ घी में हैं । वे सब उसी के पक्षपाती हैं ।" मामा ने समझाया ।

"तो क्या, मुझे अपनी बैलगाड़ी वापस पाने का कोई भी उपाय नहीं?" रामदुलारे ने व्याकुल होकर पूछा ।

"क्यों नहीं? एक उपाय ज़रूर है । ये बुजुर्ग लोग हम-तुम जैसे आम आदमी की पीड़ाओं का ख़याल नहीं करते, मगर वे अन्य बुजुर्गों के साथ अन्याय नहीं होने देते । तुम्हारे गाँव के कोई बुजुर्ग तुम्हारी ओर से पैरवी करेंगे, तो तुम्हारा काम बन सकता है ।" रामदुलारे को उसके मामा ने उपाय बता दिया ।

अब रामदुलारे एकदम निराश हो गया । उसने अपने गाँव में घटी सारी घटनाएँ कह सुनायीं । मामा ने कहा, "बेटे,यह तुमने बहुत बुरा किया । देखो मल्लवर्मा उद्दण्ड प्रकृति का ज़रूर है, फिर भी आदर से बातें करके वह सबका प्यारा बन बैठा है । ऐसी हालत में कड़ी मेहनत करनेवाले होकर भी तुम्हें कौन पूछेगा? अब तो केवल एक ही उपाय बचा है । तुम अपने गाँव के उन बुजुर्गों से अपनी उद्दण्डता के लिए क्षमा माँगो, या तो मल्लवर्मा के पैर पकड़ लो । तुम्हारा काम बन जायेगा ।"

"अगर पैर ही पकड़ने हैं, तो मैं अपने गाँव के बुजुर्गों के पकड़ूँगा ।" इतना कहकर रामदुलारे सीधे अपने गाँव पहुँचा और पहले पटवारी के घर गया । पटवारी ने उसकी ओर आँखें तरेरकर कहा, "अबे, तुझे यहाँ पर क्या काम है ? किसलिए आये हो यहाँ ? चले जाओ ।"

इसपर रामदुलारे झट पटवारी के पैरों पर गिर पड़ा और बोला, "हुज़ूर, अपनी उद्दण्डता पर शरम आ रही है मुझे । माफ़ कीजिए,

गलती हो गयी मुझसे । आप जैसे बुजुर्गों में से किसी की भी सेवा करूँ, तो मेरे माथे पुण्य लगेगा । ऐसी हालत में आप के परमपूज्य पिताजी की सेवा करने का मौक़ा मिला तो मैं ने उसे अपनी मूर्खता से गँवा दिया । आप को मुझे एक पैसा भी मेहनताना देने की ज़रूरत नहीं, मैं अभी इसी पल से उनकी सेवा करने के लिए तैयार हूँ ।"

पटवारी का दिल शान्त हो गया और वह बोला "अरे अरे, यह तुम क्या कहते हो ? सुबह तुम ने जो बातें कहीं उस से मेरी आँखें खुल गयीं हैं । धन के घमण्ड में आकर मैं अपने कर्तव्य को ही भूल बैठा था । दरअसल, मुझे अपने पिता की सेवा खुद करनी है ।"

रामदुलारे ने इसी प्रकार पटेल, जमींदार, वैद्य, धनी आदि सभी लोगों से क्षमायाचना की । वे सब अपने क्रोध को न केवल भूल ही गये बल्कि उन सब को इस बात का एहसास हुआ कि गलती असल में उन्हीं लोगों की है

इसके बाद एक हफ़्ते तक रामदुलारे ने सभी गाँव वालों के साथ बहुत ही उत्तम व्यवहार किया । रामदुलारे में यह परिवर्तन देख कर सब लोग प्रसन्न हुए ।

एक हफ़्ते बाद रामदुलारे सीधे पड़ोस गाँव में पहुँचा और उसने मल्लवर्मा के घर जाकर ललकारा, 'अरे मल्लवर्मा, मैं अपनी बैलगाड़ी ले जाने के लिए आया हूँ । जल्दी उसे तैयार करके मेरे हवाले कर दो ।"

मल्लवर्मा घर से बाहर निकला और रामदुलारे को पहचान कर बोला, "जानते हो तुम किस के साथ बात कर रहे हो ? अपनी गाड़ी चाहते हो तो मेरे साथ पहले कुश्ती लड़ो

और ताक़त हो तो मुझे हराकर गाड़ी ले जाओ ।"

"अरे, तुझे हराने के लिए कुश्ती लड़ने की क्या ज़रूरत है ?" इतना ही कहकर रामदुलारे ने उसकी छाती और मुँहपर अन्दाधुंध मुक्के बरसाना शुरु किया । इस अचानक हमले से मल्लवर्मा नीचे गिर कर ढेर हो गया ।

इसके बाद रामदुलारे ने मल्लवर्मा की गर्दन कसकर पकड़ ली और धमकी दी, "अरे, कड़ी मेहनत करने वाले मेरे जैसे आदमी की नाक़त के सामने, तुझ जैसे आलसी की ताकत की क्या हस्ती ?" इतना कहकर रामदुलारे सीधे अपनी बैलगाड़ी पर जा बैठा और अपने मामा के घर पहुँचा । मामा को उसने सारा वृत्तान्त कह सुनाया ।

"अरे, मैंने तो तुम को गाँव के बुज़ुर्गों को बुला लाने को कहा था, तुम अकेले क्यों आ गये ?" मामा ने पूछा ।

"अगर तुम मल्लवर्मा को कुश्ती में पछाड़ सकते थे तो पहले ही यह काम क्यों नहीं किया, जब वह ज़बरन तुम से गाड़ी ले गया ?" मामा ने पूछा ।

"मल्लवर्मा को आप के गाँव के बुज़ुर्गों का समर्थन प्राप्त है । उस पर अपनी ताक़त आजमाने से पहले मुझे भी अपने गाँव के बुज़ुर्गों का समर्थन प्राप्त करना चाहिए था । वह काम मैं पूरा करके आया हूँ । इस वक्त आप के गाँव के बुज़ुर्ग भले ही मेरे गाँव पहुँचकर फ़रियाद करें, मुझे भी अपने गाँव वालों के आधार से न्याय मिलेगा ।" रामदुलारे ने गर्व के साथ कहा ।

"हमारी ज़बान पर अगर हमारा नियन्त्रण हो, तो कोई भी सहानुभूति के साथ हम को समझने का प्रयत्न करेगा । जो न्याय के पथ पर चलते हैं उनके प्रति न्याय प्राप्त करने के लिए अपनी जिह्वा पर अंकुश होना चाहिए । कहावत भी है - आप भला तो जग भला । तुम अब बुध्दिमान बन गये हो मैं अब शीघ्र ही मुहूर्त निश्चित करके तुम्हारी शादी रचाऊँगा ।" रामदुलारे के मामा ने कहा ।

घर लौटकर रामदुलारे ने सारी हक़ीकत अपनी माँ को सुनायी । वह भी बहुत खुश हुयी । इसके बाद रामदुलारे ने एक गृहस्थ बनकर बहुत समय तक अपने अच्छे व्यवहार से सुखपूर्वक जीवन बिताया ।

वैद्य की ज़िम्मेदारी

पर्वत-राज्य का निवासी उत्तमशास्त्री एक अच्छे वैद्यराज के रूप में लोकप्रिय हुआ। उस राज्य का पड़ोसी राज्य पुष्प-देश पर्वत-राज्य का कट्टर दुश्मन था। पुष्प-देश का राजा था व्याघ्रसेन। उसने दो बार पर्वत-राज्य पर हमला किया और दोनों वक्त पर्वत-राज्य के राजा शिवप्रभु के हाथों बुरी तरह हार कर भाग गया।

उन दोनों राज्यों के सीमावर्ती लोग जब बीमार हो जाते, तब उत्तमशास्त्री के यहाँ इलाज के लिए ज़रूर पहुँच जाते थे।

एक दिन शिवप्रभु ने वैद्यराज के पास ख़बर भेज दी - "यदि आप शत्रु देश की प्रजा का इलाज करना बन्द न करेंगे तो आप को कठोर दण्ड भुगतना पड़ेगा।"

फिर भी उत्तमशास्त्री ने पुष्प-राज्य की प्रजा का इलाज करना बंद नहीं किया। राजकाज़ में डूबे रहने के कारण शिवप्रभु भी तात्कालिक रूप में यह बात भूल गया।

एक महीने बाद राजा शिकार खेलने जंगल में गया और शिकार खत्म होनेपर अपने रथ पर सवार हो राजधानी लौटने लगा। रास्ते में उत्तमशास्त्री अपने दो शिष्यों के साथ जड़ी-बूटियाँ खोजता हुआ दिखाई दिया।

राजा को तत्काल अपनी बात याद आयी और उसने घुड़सवारों से पूछ कर के यह ज़ान लिया कि उत्तमशास्त्री ने शत्रु-देश की प्रजा का इलाज करना बन्द नहीं किया है।

इस बीच उत्तमशास्त्री और उसके शिष्यों ने राजा के निकट पहुँच कर उसको प्रणाम किया। शिवप्रभु ने क्रोधावेश में आकर कहा, "मैं जानता हूँ कि आप एक कुशल वैद्य हैं। लेकिन मेरे आदेश का उल्लंघन करके आप शत्रु-देश की प्रजा का इलाज कर ही रहे हैं। यह तो देश-द्रोह ही माना जायेगा। मैं आप को उचित दण्ड दूँगा।" इतना कहकर राजा

रामचन्द्र तिवारी

ने सैनिकों को आदेश दिया कि वे उत्तमशास्त्री को बन्दी बनाकर राजधानी ले चलें और वह राजमहल की ओर चल पड़ा।

थोड़ी दूर आगे चलने पर राजा के रथ के पहिये की कील छूटकर गिर गयी। रथ का पहिया लुढकता जाकर एक झाड़ी में फँस गया। रथ जब एक ओर झुक कर गिरने को था, तब सारथी शीघ्रता से रथ से नीचे कूद पड़ा, मगर राजा रथ के साथ नीचे गिर पड़ा। उसके कंधे व घुटनों पर गहरे घाव लगे।

इस दृश्य को देख वैद्यराज उत्तमशास्त्री ने सैनिकों को सलाह दी- "तुम लोग राजा को घोड़े पर सवार करा कर मेरी कुटी में पहुँचा दो।" यह कहकर वह अपने शिष्यों के साथ आगे बढ़ा। राजा के कुटी में प्रवेश करते ही उत्तमशास्त्री ने उसके घाव धोये और मरहम-पट्टी की और बाद में वह कुटी के अन्दर चला गया।

गुरू के चले जानेपर उसके शिष्यों में से प्रवीण नामक एक शिष्य ने राजा से पूछा, "महाराज, हमारे आचार्य को देशद्रोह के अपराध में दण्ड देने के लिए आपके सैनिक ले जा रहे हैं। इसका मतलब इस समय आप हमारे आचार्य के शत्रु ही हैं न? अगर इस हालत में हमारे आचार्य यदि आप की चिकित्सा न करते तो आप की क्या हालत हो जाती? वैद्य का काम है रोगियों की चिकित्सा करके उनकी पीड़ा दूर करना। बस, लेकिन किसी भी वैद्यक शास्त्र में यह नहीं लिखा गया कि चिकित्सा करते समय वैद्य रोगी से यह दर्याफ्त करे कि वह शत्रु है वा मित्र।"

राजा ने उत्तमशास्त्री के शिष्य प्रवीण के कथन की सच्चाई पहचान ली। उत्तमशास्त्री को देख राजा ने कहा, "वैद्यराज, आप पहले की भाँति रोगी के संबन्ध में मित्र व शत्रु के भाव का विचार किये बिना अपनी चिकित्सा चालू रखिये। इस कार्य में अगर आप को किसी प्रकार की आवश्यकता हो, तो मेरे पास ख़बर भिजवा दीजिये।" यह कहकर राजा ने अपना कंठहार निकाल कर उत्तमशास्त्री के गले में पहना दिया और अपने परिवारसहित राजधानी लौट गया।

पाँच प्रश्न

प्राचीन काल में सुसंपन्न कौशाम्बी देश पर सूर्यसेन का राज था। बहुत समय बाद उसके यहाँ एक कन्या का जन्म हुआ। राजा बहुत ही प्रसन्न हुआ। राजकुमारी का नाम 'सुलोचना' रखा गया। बड़े लाड़-प्यार से उसका लालन-पालन होने लगा। फिर भी राजा के मन को अक्सर यह चिन्ता कुरेदती रहती कि उनके कोई पुत्र-सन्तान नहीं है। अपनी मृत्यु के बाद राजकुमारी की देखभाल कैसे होगी, इसी चिन्ता में घुल घुल कर कुछ ही दिनों में राजा का देहान्त हुआ।

बडी होकर राजकुमारी का सौन्दर्य निखर उठा; उस अनुपम सुन्दरी के साथ विवाह की इच्छा से अनेक राजकुमार कौशाम्बी में आने लगे। मगर उन में से एक भी सुलोचना को पसन्द नहीं आया, क्यों कि जो भी राजकुमार आये वे सब राजकुमारी के सौन्दर्य और अतुल वैभव-संपत्ति से आकृष्ट होकर आये थे। राजकुमारी भली भाँति जानती थी कि, ऐसे लालची राजकुमारों के साथ विवाह करने से राज्य की प्रजा का कल्याण संभव नहीं है। उसने निश्चय कर लिया कि, वह किसी ऐसे ही राजकुमार को चुनेगी, जो शासन-कार्य में दक्ष हो, विवेकशील हो, अनुपम साहसी व पराक्रमी हो और परोपकारी हो।

उन्हीं दिनों राजकुमारी सुलोचना की शिक्षा-दीक्षा करनेवाले दरबारी पंडित

सुधाकर तीर्थाटन करके लौट आये। सुलोचना ने पंडितजी को बुलवाकर उन्हें अपना निर्णय सुनाया और उनसे अनुरोध किया कि ऐसे सुयोग्य राजकुमार का चुनाव करने में वे उसकी सहायता करें। राजकुमारी का निर्णय सुनकर आचार्य सुधाकर अत्यन्त संतुष्ट हुए और उन्हों ने कहा–"तुम्हारा निर्णय प्रशंसनीय है। तुम जिस प्रकार के धीरोदात्त राजकुमार से विवाह करना चाहती हो, ऐसे व्यक्ति का चुनाव करने का एक तरीका मुझे मालूम है। उस यात्रा के दौरान मैंने अनेक विचित्र घटनाएँ देखी हैं। उनके आधार पर मैं तुम्हें पाँच सवाल बताऊँगा। तुम अब ढिंढ़ोरा पिटवा दो कि, इन पाँचों सवालों के उचित जवाब देनेवाले राजकुमार के साथ ही तुम विवाह करोगी। मेरा आशिर्वाद है–तुम्हारी मनोकामना पूरी होगी।" इतना कहकर आचार्य ने राजकुमारी को वे पाँच प्रश्न बता दिये।

गुरू के आदेशानुसार सुलोचना ने ढिंढ़ोरा पिटवा दिया। वह सुनकर देशोदेश के राजकुमार विवाह की कामना से कौशाम्बी पहुँचे। मगर उनमें से कोई भी सुलोचना के पहले ही प्रश्न का उत्तर नहीं दे पाया और सब के सब अपनासा मुँह लेकर लौट गये।

इस के बाद एक दिन नेपाल का राजकुमार धीरसिंह सुलोचना से मिलने आया और उसने सुलोचना को अपना पहला प्रश्न सुनाने की प्रार्थना की।

"इधर कुछ वर्षों से हमारे राज्य में ये बातें सुनाई दे रही हैं। 'एक बार मैं ने देखा, फिर एक बार देखने की तमन्ना है।' ये बातें कहाँ से सुनाई दे रही हैं और इनका आशय क्या है?–यही है मेरा पहला प्रश्न!" सुलोचना ने कहा।

धीरसिंह बोला–"राजकुमारीजी, इसके लिये मुझे एक सप्ताह की मुहलत दी जाय तो मैं इस प्रश्न का उत्तर दे सकता हूँ।"

सुलोचना ने मान लिया।

अपने जीवन में साहस और पराक्रम को ही महत्त्वपूर्ण माननेवाला धीरसिंह तत्काल उत्साहपूर्वक अपने घोड़े पर सवार हुआ और पूर्वी दिशा में प्रयाण करके आखिर एक जंगल में पहुँचा। वहाँ पर उसने दो सियार देखे जो एक पेड़ के ऊपर बैठकर रो रहे थे। धीरसिंह पशुपक्षियों की भाषा जानता था। वह घोड़े से उतरकर उन सियारों के पास पहुँचा और उसने उनसे पूछा—"बताओ, तुम दोनों क्यों रो रहे हो?"

"यहाँ से थोड़ी दूरी पर एक गुफा में एक गैंड़ा रहता है। वह हमारी संतान को हमेशा अपने पैरों से कुचलकर मार डालता है और इसी कारण हम निःसंतान होते जा रहे हैं। यही हमारे विलाप का कारण है।" सियार दंपति ने अपने रोने का कारण बताया।

यह सुनकर धीरसिंह तुरन्त गुफा की ओर चल पड़ा। तब सियार ने उसे गुफा का रास्ता दिखाया। गैंड़ा गहरी नीन्द सो रहा था। धीरसिंह ने सोचा—सोनेवाले प्राणी पर तलवार चलाना वीरों को शोभा नहीं देता। इसलिये गैंड़े के जागने तक धीरसिंह समीप के एक पेड़ पर जा बैठा। थोड़ी देर बाद गैंड़ा जागकर गुफा के बाहर निकला। धीरसिंह अचानक पेड़ पर से उस पर कूद पड़ा और कुल्हाड़ी से उसने गैंड़े का सिर फोड़ डाला। गैंड़ा छटपटाकर वहीं ढेर हो गया।

धीरसिंह के साहस पर प्रसन्न होकर सियार दंपति बोल उठी—"राजकुमार, तुम्हारा यह उपकार हम जिन्दगी भर भी नहीं भूलेंगे। बताओ, तुम इस जंगल में किस कारण आये? मालूम होने पर हम भी यथाशक्ति तुम्हारी सहायता करेंगे। धीरसिंह ने अपने आगमन का कारण बताया।

"हमने भी इन बातों के बारे में सुना है। पर, स्पष्ट रूप से यह नहीं जानते कि ये बातें कहाँ से निकल रही हैं। फिर तुम जैसे साहसी वीर को कोई भी कार्य असंभव

नहीं है। इस जंगल को पार करके बाईं तरफ़ आगे बढ़ो। तुम्हें अवश्य विजय प्राप्त होगी।" यह कहकर सियार दंपति ने धीरसिंह को बिदा किया।

धीरसिंह पैदल ही जंगल पार करके घने पौधों से भरे एक समतल प्रदेश में पहुँचा और जरा सा विश्राम करने के विचार से एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। वहाँ बैठे हुए उसने अपने सामने दो सर्पों को देखा। बड़ा सर्प छोटे सर्प को काटने जा रहा था। धीरसिंह ने छोटे सर्प की रक्षा के हेतु म्यान से अपनी तलवार बाहर निकाली। इतने में दोनों सर्प अदृश्य हुए और उनके स्थान पर दो गंधर्व प्रत्यक्ष हुए।

धीरसिंह ने उनसे पूछा–"तुम लोग कौन हो? परस्पर एक दूसरे को क्यों सता रहे हो?"

छोटे गंधर्व ने कहा–"मैं ने बचपन में अनजाने में इसका अपराध किया था। उस समय से यह मुझ से बदला लेना चाहता है। जब भी मौका मिले, यह मुझे सताता रहता है।"

"अनजाने में छोटे लोग भूल करते हैं, तो उन्हें क्षमा करना ही बड़ों का लक्षण है। इसलिये तुम दोनों अपनी पुरानी दुश्मनी भूलकर आपस में प्रेमपूर्ण व्यवहार करो। उसी में तुम दोनों की भलाई है।" यह कहकर धीरसिंह ने उन्हें इस बात के पुष्ट्यर्थ अनेक दृष्टांत सुनाये।

धीरसिंह की बातें सुनकर दोनों गंधर्व खुश होकर बोले–"तुम ने हमारी पुरानी दुश्मनी मिटाकर हम में मित्रभाव स्थापित किया है। यह उपकार भुलाया नहीं जा सकता। बताओ, हम किसी प्रकार तुम्हारी कोई मदद कर सकें तो उस रूप में हम तुम्हारा यह ऋण चुका सकेंगे।

धीरसिंह ने उनको अपने वहाँ आने का कारण बताया।

"हम ने भी ये बातें सुनी हैं। यहाँ से थोड़ी दूर आगे चलो और दाईं तरफ़ मुड़ो तो तुम्हें एक तालाब दिखाई देगा।

इसके बाद तुम्हें अपने आप अपने कर्तव्य का बोध होगा। तुम्हारी विजय ज़रूर होगी। साथ ही धीरसिंह को आशिर्वाद देकर गंधर्व अदृश्य हुए।

धीरसिंह गंधर्वों के बताए रास्ते चलकर उस तालाब तक पहुँचा। आराम करने के ख्याल से धीरसिंह तालाब के किनारे एक पत्थर पर बैठ गया। उसी वक्त तालाब से एक मत्स्यकन्या बाहर निकली और धीरसिंह का हाथ पकड़कर वह उसे पानी के अन्दर ले गयी।

उस तालाब के तले एक सुन्दर उद्यान फैला हुआ था। दूर पर झरने कल कल नाद करते बह रहे थे। तरह तरह की सुन्दर लताएँ व पेड़ पौधे फल-पुष्पों से लदे हुए थे। सारी फर्श ऐसी शोभायमान प्रतीत हो रही थी, कि मानों उसमें मरकत जड़े हुए हों। उस उद्यान के बीच एक विशाल भवन था। मत्स्यकन्या धीरसिंह को उस भवन के अन्दर ले गयी और उसने एक विशाल मण्डप के बीच रखे नवरत्नों से जड़े सुशोभित आसन पर धीरसिंह को बिठाया। मंडप के चारों तरफ चार सुन्दर रमणियों के चित्र क्रमबद्ध अंकित थे, मगर एक पाँचवा स्थान खाली था। मत्स्यकन्या ने शीघ्र एक चित्र बनाकर उस खाली स्थान को भर दिया।

थोड़ी ही देर में धीरसिंह उस निर्जन महल से बाहर आया। वह भूख से व्याकुल था, इसलिये उसने वहाँ के कुछ फल

तोड़कर खा लिये । पर उसकी भूख मिटी ही नहीं । वह झरने का पानी पीता रहा, मगर उसकी प्यास नहीं बुझी ।

इतने में सूर्यास्त होकर चारों तरफ अंधेरा छाने लगा; इसलिये धीरसिंह फिर महल के अन्दर आ गया । ज्योंही उसने मंडप में कदम रखा, त्योंही वहाँ के सारे दीप जल उठे । दीवार पर लटके पाँचों चित्र पाँच सुंदरियों में परिवर्तित होकर वे पाँचों युवतियाँ धीरसिंह को घेरकर नाचने-गाने लगीं । सारी रात नृत्य-संगीत में गुज़र गयी और सुबह ही वे पाँचों युवतियाँ चित्र बनकर दीवारों पर लटकनें लगीं ।

धीरसिंह अत्यंत विस्मय में आकर उस मंडप को परखकर देखने लगा । उस वक्त उसने देखा कि एक छेद में से चीटियाँ कतार बाँधकर बाहर निकल रही हैं । उसने उस दीवार पर दस्तक देकर देखा तो उसे लगा कि उस जगह दीवार भीतर से खोखली है । तुरन्त उसने वहाँ की दीवार तोड़ डाली तो वहाँ एक आला दिखाई दिया जिस में एक चाभी को लेकर उसने भवन के दरवाज़ों के ताले एक के पीछे एक खोलकर देखने का प्रयास किया और उससे आखिरी कमरे का ताला खुल गया । उस कमरे में ज़मीन पर एक छोटीसी सन्दूक थी, मगर उसमें ताला पड़ा था! उसने सारे कमरे में चाभी की खोज की, पर कोई फायदा न रहा । वह कमरे के बाहर आनेही वाला था कि चलते चलते उसका पाँव जमीन में गड़ी किसी खूंटी पर पड़ा और 'खट्' आवाज़ से सन्दूक खुल गयी । उसके भीतर ताँबे का एक तमगा था । धीरसिंह ने वह तमगा हाथ में लेकर पढ़ा । उसपर लिखा हुआ था—'यह सब जादू है । इस उद्यान के बीच स्थित सुवर्ण वृक्ष को जो साहसी वीर उखाड़ सकेगा, वही इस जादू को जान सकता है ।'

धीरसिंह बड़े ही उत्साह से उद्यान में पहुँचा । तमगे पर लिखे अनुसार उसे

उद्यान के बीच स्वर्णवृक्ष दिखाई दिया; लेकिन लाख कोशिश करने पर भी वह उसे उखाड़ न सका। थोड़ी ही देर में उसकी दृष्टि उसी वृक्ष के बगल में स्थित एक और छोटे स्वर्णवृक्ष पर पड़ी। उसने छोटे वृक्ष को लीलया उखाड़ा और दूसरे ही पल बड़ा वृक्ष भी कड़ाकड़ आवाज़ करते हुए गिर पड़ा। उस ध्वनि को सहन न कर धीरसिंह बेहोश होकर गिर पड़ा। थोड़ी देर बाद जब उसने आँखें खोलीं तब उद्यान और भवन सब अदृश्य थे। लेकिन उसने रात में देखी पाँचों युवतियाँ दौड़कर उसके पास पहुँची और उन्होंने उसे घेर लिया। धीरसिंह ने उनसे पूछा–"तुम लोग कौन हो? यह सब जादू क्या है?"

"यहाँ से दस कोस की दूरी पर स्थित मायावती नगर की हम पाँच राजकुमारियाँ हैं। युक्त-वयस्का होनेपर हम ने अपने पितासे अनुरोध किया कि वे हमारे विवाह संपन्न करें। हमारी जल्दबाजी पर क्रुद्ध होकर हमारे पिता ने हमें इस जादू के भवन में बन्दी कराया। हम ने अपने अपराध को क्षमा करने की उनसे प्रार्थना की; तब उन्होंने कहा–"जो वीर तुम लोगों को इस जादू-भवन से मुक्त करेगा, वही तुम लोगों का पति बनेगा।" लंबे अरसे के बाद यह जादू तोड़नेवाले महानुभाव तुम्हीं हो। इसलिये तुम्हें

हमारे साथ विवाह करना होगा"—पाँचों राजकुमारियों ने एक स्वर में कहा ।

"मैं इस समय एक खास समस्या हल कर रहा हूँ । अभी विवाह के बारे में सोच ही नहीं सकता । तुम लोगों की इच्छापूर्ति मैं नहीं कर पा रहा हूँ, क्षमा कीजिये ।" यह कहकर धीरसिंह आगे बढ़ा ।

वह थोड़ी ही दूर आगे बढ़ा था कि, उसे ये शब्द सुनाई दिये—"एक बार मैं ने देखा है, फिर एक बार देखने की तमन्ना है ।" धीरसिंह अब उसी दिशा में चलने लगा, जिस दिशा से ये शब्द उसने सुने थे । आगे जाने पर उसे एक पेड़ के तले एक दुर्बल, कंकाल जैसा राजकुमार बैठा हुआ दिखाई दिया ।

धीरसिंह ने उसके निकट जाकर पूछा—"तुम कौन हो? इस दीन अवस्था में कैसे हो?"

राजकुमार ने उत्तर में सुनाया—"यहाँ समीप के जादू भवन में प्रवेश करनेवालों में से मैं एक हूँ । वहाँ की राजकुमारियों में से एक को देखकर मैं उसके सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया और उसी के साथ विवाह करना चाहा मैंने । लेकिन मैं जब उस भवन से बाहर निकला तब फिर उस ओर जाने का रास्ता मैं भूल गया । जिस कन्या को मैं ने एक बार देखा था, उसे फिर एक बार देखने की मेरी तमन्ना है । मगर मेरी इच्छा, इच्छा ही रह गयी ।"

इसके बाद धीरसिंह उस राजकुमार को लेकर जादू-भवन में पहुँचा और उस कन्या के साथ उसने उस राजकुमार का विवाह संपन्न किया ।

इसके बाद धीरसिंह कौशांबी पहुँचा । सुलोचना से मिलकर उसने सारा वृत्तान्त सुनाया और उसके पहले प्रश्न का सही उत्तर उसे सुनाया ।

सारा वृत्तान्त सुनकर सुलोचना ने कहा—"हाँ, मेरे प्रथम प्रश्न का यही सही उत्तर है । वे शब्द आजकल नहीं सुनाई दे रहे हैं । और इसके साथ सुलोचना ने धीरसिंह को विदा किया ।

प्रतिज्ञा-भंग

दृढ़व्रती विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आये, शव को पेड़ से उतारा और उसे कंधे पर लादकर हमेशा की तरह श्मशान की ओर चलने लगे। तब शव में वास करनेवाले बेताल ने राजा से पूछा–"राजन्, मुझे आप पर दया आती है कि आप किसी असमर्थ किन्तु चालाक आदमी की धोखेबाजी में आकर भूतप्रेतों के निवास-स्थान इस श्मशान में अर्धरात्रि के समय घूम-भटक रहे हैं। हो सकता है, आपने उस असमर्थ आदमी को आश्वासन दिया हो कि आप उसका अंगीकृत कार्य अवश्य सफल बनाएँगे। परन्तु श्रेष्ठ नीतिज्ञ और विवेक-संपन्न व्यक्ति भी कभी कभी स्वार्थ के वशीभूत हो अपनी प्रतिज्ञा का भंग करते हैं। इसके उदाहरण-स्वरूप में आपको वज्रदेह की कहानी सुनाता हूँ। सुनिए, इससे आप अपने श्रम को भी भुला सकते हैं।"

बेताल कथा

बेताल ने कहानी सुनाना शुरू किया– सिंघूर देश पर सिंहभूपाल नाम के राजा राज्य करते थे। उनके एक इकलौती बेटी थी! जब सिंहभूपाल अपनी सुपुत्री के विवाह के बारे में सोचने लगे, तब अनेक राजकुमारों ने अपने दूतों के द्वारा राजा के पास संदेश भेजे कि वे सुचित्रा से शादी करना चाहेंगे।

सुचित्रा अपने पिता के द्वारा नियोजित वर से विवाह नहीं करता चाहती थी। उसने प्रतिज्ञा की कि वह उस राजकुमार से विवाह करेगी जो अपने को अत्यन्त वीर और पराक्रमी सिद्ध करेगा।

उस देश के मंत्री थे भानुवर्मा। उनके एक इकलौता पुत्र था चन्द्रवर्मा! मंत्री बड़ा चालाक और धूर्त था, तो उसका सुपुत्र नालायक और कायर था। उसके मन में प्रबल इच्छा पैदा हुई कि कैसे भी क्यों न हो राजकुमारी सुचित्रा से अपना विवाह सपन्न हो जाए। अपनी यह इच्छा उसने पिता के सामने प्रकट की।

मंत्री भानुवर्मा ने थोड़ी देर सोचा और फिर चन्द्रवर्मा से कहा–"बेटा, तब तो एक छोटा-सा साहस करो। पूर्व सीमावर्ती गाँवों में एक बाघ मनुष्यों को मार डालता है। तुम उस बाघ का संहार करने की कोशिश करो। अगर तुम बाघ को मार डाल सको, तो समझ लो राजकुमारी सुचित्रा तुम्हें प्राप्त हो गई!"

चन्द्रवर्मा जंगल की ओर गया, जहाँ वज्रवर्मा से मुलाकात हुई। वह एक बाघ की मृत देह ले जा रहा था। वज्रवर्मा शक्तिशाली वीर था, जिसने उस बाघ को अपनी मुठ्ठी के आघात से मार डाला था।

इस पर चन्द्रवर्मा झट वज्रदेह के पैरों में गिर पड़ा और उसने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की–". महाशय, बाघ की यह लाश अगर आप मुझे सौंप देंगे तो मैं उसे राजा को दिखाकर उनसे बढ़िया पुरस्कार प्राप्त कर लूंगा। मैं सच कहता हूँ, मैं कायर हूँ।

तलवार चलाने की क्षमता मुझ में नहीं है। आप इतनी कृपा करेंगे? आपका यह एहसान मैं कभी नहीं भूलूंगा।"

वज्रदेह ने घृणाभरी दृष्टि से चन्द्रवर्मा की ओर देखा और बाघ की लाश को वहीं पटक कर वह वहां से चल दिया।

इसके बाद चन्द्रवर्मा मरे बाघ को लेकर राजा के पास पहुँचा और उसने निवेदन किया—"प्रभु, आज मैंने इस बाघ को मार डाला! अब आप ही बताइए, क्या मुझसे बढ़कर कोई अधिक साहसी वीर और पराक्रमी कहीं हो सकता है?"

राजा ने अपनी उंगली से एक हीरे की अँगूठी निकालकर चन्द्रवर्मा को भेंट देते हुए कहा—"इस बाघ का वध करके अगर तुम शूर और पराक्रमी कहलाते हो, तो बताओ जिन लोगों ने कई राज्य जीते और अनेक राक्षसों को मार डाला, उन्हें क्या उपाधि देनी होगी?"

राजा की यह बात सुनकर चन्द्रवर्मा का चेहरा पीला पड़ गया। घर पहुँच कर उसने सारी बातें अपने पिताजी को सुनायी। मंत्री ने सब कुछ सुनकर अपने पुत्र को सलाह दी—"तुम अभी अपने सेवकों द्वारा वज्रदेह का पता लगाओ, उस पर कड़ी निगरानी रखो, अन्यथा राजकुमारी तुम्हें मिलने से रही।"

चन्द्रवर्मा ने जासूसों के द्वारा वज्रदेह को ढूँढ निकाला और उसपर कड़ी निगरानी रखने के लिए दो सिपाहियों को नियुक्त किया।

एक दिन वज्रदेह किसी पहाड़ी प्रदेश से होकर गुज़र रहा था। तब एक गुफ़ा के भीतर से उसने एक ललकार सुनी—"रुक जाओ। मेरी गुफ़ा से होकर आगे बढ़ने की हिम्मत करनेवाले तुम कौन हो? यह धृष्टता कैसी!"

वज्रदेह ने गुफ़ा की ओर देखा। गजबल नाम का एक राक्षस हाथ में कुल्हाड़ी लिए गुफ़ा से बाहर निकला और उसने वज्रदेह पर वार करने के लिए

कुल्हाड़ी उठाई। पर वज्रदेह उसके चंगुल में नहीं आया, उसीने राक्षस को खूब सताया। अन्त में वज्रदेह ने राक्षस के हाथ से कुल्हाड़ी छीन ली और उसके हाथ-पैर काट दिये। फिर वज्रदेह अपने रास्ते आगे बढ़ा।

दूर से भेदिये यह सारा दृश्य देख रहे थे। फ़ौरन राजधानी जाकर उन्होंने यह वार्ता भानुवर्मा तथा चन्द्रवर्मा को दी। भानुवर्मा ने अवसर से लाभ उठाना चाहा। उसने चन्द्रवर्मा के कपड़े फाड़ डाले और इधर उधर उसे थोड़ा घायल किया। फिर उसे राजा के पास भेज दिया! चन्द्रवर्मा ने राजा के दर्शन किये और निवेदन किया– "महाराज, गजबल नाम के दुष्ट राक्षस का मैंने मुकाबला किया, उसके साथ घोर युद्ध कर आखिर मैंने उसके हाथ-पैर काट डाले। मेरे इस साहस को देख आप मुझे एक असामान्य पराक्रमी और वीर नहीं कहेंगे?"

राजा ने मुस्कुराते हुए कहा–"चन्द्र, मैं तुम्हारी इन बातों पर विश्वास करूँ तो कैसे? तुम्हें याद है एक बार शिकार खेलने हमारे साथ तुम भी जंगल आये थे! एक साधारण भालू को देखकर मारे डर के तुम पेड़ पर जा बैठे! उस घटना को मैं अभी तक भूला नहीं हूँ। फिर भी तुम कहते हो तो मैं असली बात का पता लगाऊँगा। तुम दो दिन ठहरो तो।"

राजा ने अपने गुप्तचरों को आदेश दिया कि गजबल के साथ वास्तव में क्या हुआ इसका पता लगाया जाए। गुप्तचर दो दिनों में वज्रदेह को राजा के पास ले आये और उन्होंने कहा–"महाराज, गजबल के हाथ और पैर काटनेवाला वीर यह है वज्रदेह! उसी से सारी कथा जानिए।"

वज्रदेह का गठा हुआ शरीर, उसका पौरुष और उसका नम्रतापूर्ण व्यवहार देखकर राजा ने जान लिया कि वज्रदेह अवश्य एक साहसी और पराक्रमी वीर है। राजा ने अपनी पुत्री सुचित्रा के लिए

वज्रदेह को पसंद किया और विवाह की तैयारियाँ प्रारंभ कर दीं।

दूसरे दिन भानुवर्मा ने राजसभा में राजा से निवेदन किया–"प्रभु, मालूम होता है कि सुचित्रा के विवाह के बारे में आप कुछ जल्दबाज़ी कर रहे हैं। हमारे राज्य में वज्रदेह से भी बढ़कर पराक्रमी और वीर हो सकते हैं। इसलिए मैं प्रार्थना करता हूँ कि अधिक से अधिक पराक्रमी वीर को ढूँढ़ निकालने के लिए आप होनहार वीरों की एक प्रतियोगिता आयोजित कीजिए।"

राजसभा के अन्य सभासदों ने भी मंत्री भानुवर्मा की बात का समर्थन किया। इस पर राजा ने प्रतियोगिता के संबंध में ढिंढ़ोरा पिटवाया।

दूसरे दिन प्रतियोगिता देखने के लिए झुंड के झुंड लोग जमा हुए! लेकिन गजबल जैसे दुष्ट राक्षस को लोहे के चने चबानेवाले वज्रदेह के साथ लड़ने के लिए कोई आगे नहीं आया।

ऐसे एक घंटे का समय बीता! अचानक एक अजूबा हुआ–जिसकी किसी ने कल्पना न की थी, वह हुआ। भीड़ को चीरता हुआ चन्द्रवर्मा वज्रदेह के पास आ गया और उसके साथ जूझने के लिए उसने म्यान से तलवार निकाली। राजा तथा युवरानी यह दृश्य देखकर आश्चर्य-चकित हुए। सभी उपस्थित लोगों को भी विस्मय हुआ।
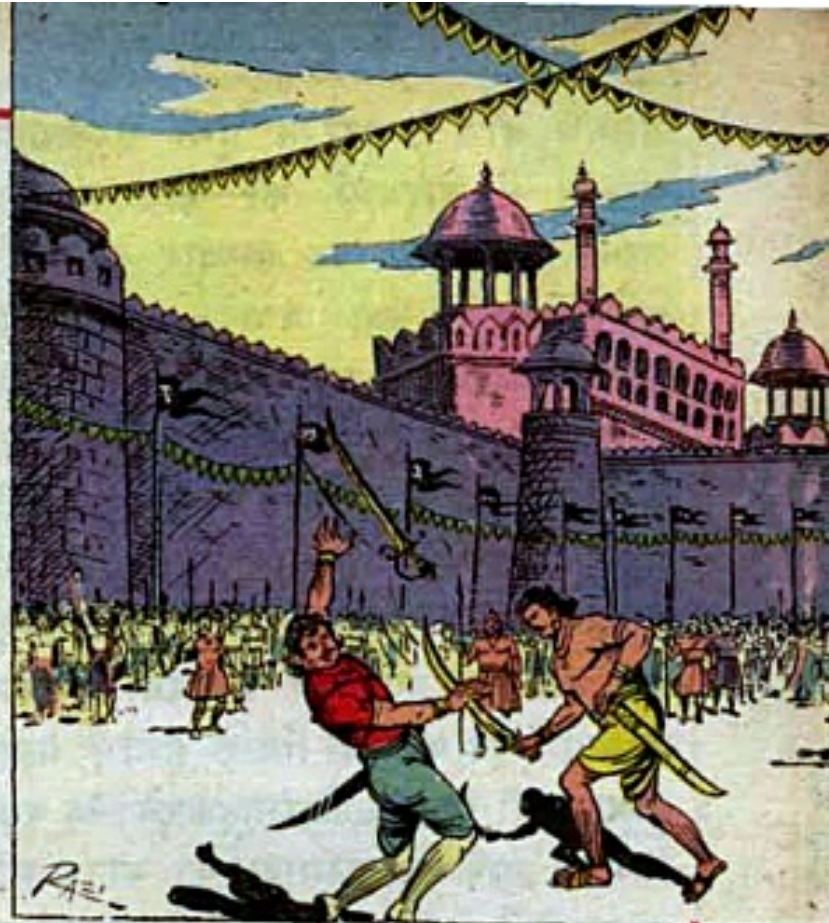
वज्रदेह ने चन्द्रवर्मा की ओर नफ़रत भरी निगाह से देखा। उसने चन्द्रवर्मा की तलवार पर अपनी तलवार से ऐसा वार किया कि चन्द्रवर्मा के हाथ से तलवार छूट कर दूर जा गिरी। उपस्थित लोगों ने वज्रदेह का सहर्ष जयजयकार किया।

राजा विक्रमार्क को यह कहानी सुनाकर बेताल ने कहा–"राजन्, अत्यंत साहसी और पराक्रमी वज्रदेह और अत्यंत कायर चन्द्रवर्मा के बारे में मेरे मन में कई शंकाएँ उठ खड़ी हो रही हैं।

असमर्थ और कायरों से घृणा करनेवाले वज्रदेह ने चन्द्रवर्मा की कायरता को जानते हुए भी उस पर तलवार का वार क्यों किया? क्या वज्रदेह ने अपनी प्रतिज्ञा का भंग तो नहीं किया? राजकुमारी सुचित्रा के साथ विवाह करके सिंधूर देश के राजा बनने के प्रलोभन के कारण उसने यह प्रतिज्ञा-भंग किया? वज्रदेह के पराक्रम और सामर्थ्य से अच्छी तरह परिचित होते हुए भी चन्द्रवर्मा उसका सामना करने को क्यों तैयार हुआ? क्या राजकुमारी के साथ विवाह करने का दृढ़ निश्चय उसके इस दुस्साहस का कारण हो सकता है? मेरी इन शंकाओं का समाधान जानते हुए भी आप नहीं करेंगे तो आपका सिर फूट कर टुकड़े टुकड़े हो जाएगा।

विक्रमार्क ने कुछ सोचकर यों उत्तर दिया–"वज्रदेह और चन्द्रवर्मा के व्यवहारों के संबंध में शंका करने के लिए कोई गुंजाइश नहीं है। दोनों ने अपनी अपनी प्रकृति के अनुसार व्यवहार किया है। वज्रदेह के मन में कायरता और असमर्थता के प्रति जो घृणा थी, उसी के वश होकर उसने राज-परिवार की प्रतिष्ठा तथा देश के भविष्य का विचार कर चन्द्रवर्मा पर आक्रमण किया। इसमें उसका कोई स्वार्थ नहीं है। न ही इससे उसकी प्रतिज्ञा का भंग हुआ। अब बात रही चन्द्रवर्मा की। वह अपने पिता भानुवर्मा के षड्यंत्र का पूर्णतः शिकार बना था। उसने सोचा था कि तलवार ग्रहण करने से डरनेवाले कायर और असमर्थ व्यक्ति को देखते ही वज्रदेह घृणा के मारे उसके साथ लड़े बिना तलवार फेंक देगा। परिणामस्वरूप चन्द्रवर्मा पराक्रमी माना जाएगा और उसे राजकुमारी की प्राप्ति होगी। बस, इतनी-सी बात है। चन्द्रवर्मा में उत्पन्न दुःसाहस का और कोई कारण नहीं है।"

राजा का यह उत्तर सुनकर बेताल शव के साथ अदृश्य हो पुनः पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

झूठी तारीफ़

शिवगिरी के राजा विजयशील के दरबार में रमानन्द नामक व्यक्ति राजधानी के शहर के कोतवाल का पद सम्हाल रहा था। राजा विजयशील कुछ स्तुतिप्रिय होने के कारण स्तुति करनेवालों के प्रति अपने मन में विशेष कृपाभाव रखता था। इस बात से परिचित यह रमानन्द भी मौका मिलते ही राजा की बढ़ा चढ़ा कर प्रशंसा किया करता था, और इसी कारण राजा का विशेष प्रीतिपात्र बन बैठा था।

रमानन्द धन का लालची था। राजा के साथ उसका जो निकट संबन्ध था, उसका फायदा उठाकर रमानन्द शहर के व्यापारियों को खूब डरा धमका कर उन से भारी रकमें वसूलता था और रिश्वत लेकर कुछ अपराधियों को मुक्त करता था। इन सारी बातों से राजा का मन्त्री भलीभाँति वाक़िफ़ था मगर रमानन्द राजा का प्रिय व्यक्ति के होने के कारण वह रमानन्द पर कोई उचित कार्रवाई नहीं कर पाता था।

एक बार दशहरे के उत्सव में राजधानी नगर में नाटकों के प्रदर्शन का आयोजन हुआ। उनमें राज्य के कतिपय अन्य अधिकारियों के साथ रमानन्द ने भी भाग लिया। राजा का वेष धारण कर उसने अपने अभिनय कौशल का प्रदर्शन किया और राजा उससे और ही प्रसन्न हुआ।

नाटक की समाप्ति पर राजा ने रमानन्द को बुलाकर पूछा—"तुम ने राजा के पात्र का अभिनय ऐसी शान और सहज रूप में कैसे किया?"

इस के उत्तर में रमानन्द ने कहा—"प्रभु, यदि किसी पात्र के गुण-विशेषों का अत्यंत हूबहू अभिनय करना हो, तो वह तभी संभव होगा, जब कोई उस व्यक्ति के

रश्मि साहा

निकट संपर्क में रहें। तभी अभिनेता उस पात्र के प्रति न्याय कर सकता है। मैं अक्सर आप के दर्शन करने आता हूँ, इसीलिये तो एक आदर्श प्रभु का व्यवहार कैसे होता है, इसके संबंध में प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त कर मैं सफलतापूर्वक अभिनय कर सका।"

यह उत्तर सुन राजा फूला न समाया और अपना कण्ठहार निकाल कर उसने रमानन्द को भेंट किया।

पार्श्व में खड़े रहकर यह सारा तमाशा देखनेवाला मन्त्री विवश होकर मौन रह गया।

दूसरे दिन जो नाटक अभिनीत हुआ उसमें रमानन्द ने एक डाकू के पात्र का अभिनय किया। यह अभिनय भी राजा को अद्भुत प्रतीत हुआ। इस पर भी राजा ने रमानन्द से पूछा—"रमानन्द, तुम ने डाकू का अभिनय भी अद्भुत कुशलता से किया। यह कैसे संभव हुआ?"

रमानन्द इस पर सही उत्तर नहीं दे पाया। अब पसो-पेश में पड़ गया।

मन्त्री को रमानन्द का असली स्वरूप उजागर करने के लिये यह मौक़ा बड़ा अच्छा लगा। उसने राजा से कहा—"महाराज, कल रमानन्द ने आप को राजा के पात्र के अभिनय की सफलता के संबंध में जो मंतव्य दिया वह आप को स्मरण होगा ही! उसी आधार पर मुझे लगता है कि रमानन्द किसी डाकू के साथ अवश्य ही घनी मित्रता रखता है। वरना आज के नाटक के डाकू के पात्र का अभिनय वह इतनी स्वाभाविकता से कैसे कर सकता?"

मन्त्री की बातें सुनकर राजा के मन में कुछ संदेह हुआ और उसने रमानन्द की ओर तीक्ष्ण दृष्टि से देखा। राजा की इस दृष्टि से ही रमानन्द पानी पानी हो गया और उसने अपना मस्तक झुका लिया।

राजा ने सेवकों के द्वारा रमानन्द को बन्दी बनाया! और बाद में जब उसने रमानन्द के बारे में पूछताछ करवायी, तो उसे रमानन्द की रिश्वतखोरी और अनैतिकता का पूरा पता चल पड़ा।

ज्ञान का खजाना

इस मास का ऐतिहासिक महापुरुष

शाहजहाँ

जहांगीर का बेटा, शाहज़ादा खुर्रम, शाहजहाँ नाम से दिल्ली का पाँचवाँ बादशाह बना। उसका जन्म ५ जनवरी १५९२ को हुआ था।

जहांगीर जब अक्तूबर १६२७ में पैगंबरवासी हुआ, तब शाहजहाँ दक्षिण में था। जहांगीर की बेग़म नूरजहाँ अपने छोटे शाहज़ादे शहरियार को सिंहासन देने के पक्ष में थी। मगर शाहजहाँ राजधानी पहुँचा और उसने अपने ससुर आसफ़-खान—जो बड़ा ताक़तवर दरबारी था—की मदद से सिंहासन पर कब्ज़ा कर लिया। शाहजहाँ ने ही इतिहास प्रसिद्ध मयूर-सिंहासन बनवाया। सुप्रसिद्ध जामा मस्जिद और लाल किला उसी के बनवाये स्मारकों में से हैं। मगर इन सबसे बहुत प्रसिद्ध है आगरे का ताजमहल, जो उसने अपनी प्रिय मुमताजमहल की कबर पर बाँधा है! १६५७ में वह बीमार हुआ और उसके पुत्रों दारा, शुजा, औरंगजेब व मुराद में राज्य के वारिस बनने की बात को लेकर लड़ाई छिड़ गई। औरंगज़ेब विजयी साबित हुआ और जुलाई १६५८ में उसने राजगद्दी पर कब्ज़ा कर दिया। बन्दी अवस्था में शाहजहाँ की १६६६ में मृत्यु हुई।

वह कौन?

एक राजा ने अपने सभी पुत्रों व भानजों को एक मन्दिर के सामने इकट्ठा होने का आदेश दिया था। अपने बाद अपने सिंहासन पर बैठने लायक सभी जवानों को वह एक साथ देखना चाहता था। कुछ ज्ञानी बुजुर्गों को भी वह साथ लाया था। ताकि उनमें से सुयोग्य राजकुमार चुनने में उनकी राय उपयुक्त सिद्ध हो।

राजगुरु ने उन कुमारों से सवाल किया, "आज तुम में से किसको सबसे बढ़िया नाश्ता मिला? कौन सबसे बढ़िया वाहन में आया है? कौन सबसे बढ़िया आसन पर बैठा है?"

उनमें से कुछ राजकुमार सचमुच ही बहुत उत्तम रथों या घोड़ों पर सवार हो आये थे, कुछ नौकरों द्वारा लाये गये रत्न-जडित बैठकों या दीवानों पर बैठे हुए थे।

बहुत से राजकुमारों के उत्तर देने के बाद एक युवा राजकुमार खड़ा हुआ और उसने कहा—"आज मैंने ही सबसे बढ़िया नाश्ता खाया है, क्योंकि वह मेरी माँ ने मुझे दिया था; मैं ही सबसे बढ़िया वाहन से—अपने पैरों से चलकर—यहाँ आया हूँ और मैं ही सबसे बढ़िया आसन पर—इस पृथ्वी की गोद में बैठा हूँ।"

दन्तकथा के अनुसार वह राजकुमार कौन था?

.........पृष्ठ ८ देखिए

विज्ञान के मज़े

हस्तांतरण
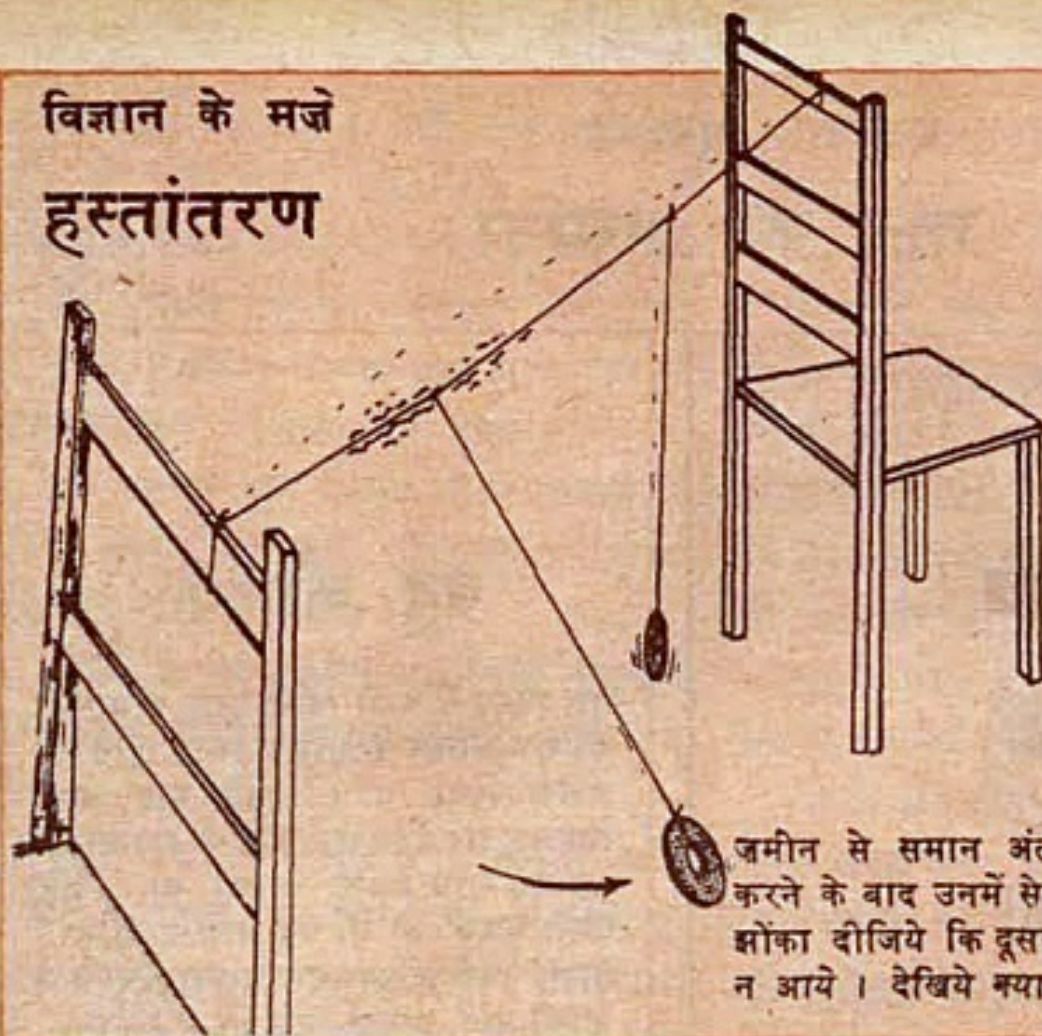
सूचनाएं :

छः फुट की रस्सी का एक छोर एक कुर्सी की पीठ से बाँधिये और दूसरा छोर दूसरी एक कुर्सी के पीठ से। इस आड़ी रस्सी में समान अंतरों पर दो फुट लम्बी दो रस्सियों के एक एक छोर बाँध दीजिये। अब इन दो फुट लंबी रस्सियों के जमीन की ओर लटकते छोरों में दो समान वजन जमीन से समान अंतर पर लटके रहे। इतना करने के बाद उनमें से एक वजन को इस प्रकार झोंका दीजिये कि दूसरा वजन उसके रास्ते में न न आये। देखिये क्या होता है।

क्या होता है और क्यों ?

थोडे ही क्षणों में, दूसरा वजन भी धीरे से झूलने लगता है। और थोड़ी देर बाद पहला वजन झूलना बन्द करता है। एकाध मिनट बाद दूसरा वजन रुक जाता है और पहला वजन झूलने लगता है। गति का यह हस्तांतरण बहुत बार चलता है, तब तक कि उनका झूलना धीमा पड़ते पड़ते दोनों वजन थम जाते हैं।

आड़ी बंधी रस्सी पर ठीक से ध्यान देने पर पता चलता है कि झूलनेवाले वजन के खिंचाव से वह हिलती है। ऐसा होते हुए आड़ी रस्सी के हिलने से दूसरे वजनवाली रस्सी खींची जाती है और दूसरा वजन झूलने लगता है। ऐसा होते हुए दोनों वजन झूलते झूलते आड़ी रस्सी को विरुद्ध दिशा में खींचने लगते हैं और इसी के कारण एक वजन अपनी गति दूसरे वजन को दे देता है और दोनों वजनों को बारी बारी से झूलने की गति मिलती रहती है।

आड़ी रस्सी अगर इस प्रकार बाज़ू में झुककर दूसरे वजन की गति हस्तांतरित न करती, तो गति का यह अदलबदल असंभव हो जाता। इसलिए रस्सी के बदले आप किसी ठोस डंडे या लकड़ी का प्रयोग करते तो वह बाज़ू में खींच न सकने के कारण एक वजन की गति इस तरह दूसरे वजन में हस्तांरित नहीं हो पाती। आप को क्या लगता है, हो पाएगी ? खुद आजमा के देखिये तो ?

संसार के आश्चर्य

ऱ्होड्स् की अति विशाल मूर्ति

ऱ्होड्स् बंदरगाह के प्रवेशद्वार पर सूर्य-देवता अपोलो की एक अतिविशाल मूर्ति खड़ी की गयी थी । यह मूर्ति काँसे की बनी थी । चार्ल्स नाम के एक कल्पक और दैवी शिल्पकार ने इसे बनाने में १२ साल परिश्रम किये थे ।

हमें पक्का मालूम नहीं है, मगर कहा जाता है कि यह मूर्ति दोनों बाजुओं में अपने पैर फैलाकर प्रवेशद्वार पर खड़ी थी और जहाज़ इन दो पैरों के बीच से होकर आते-जाते थे । प्रकाश देने के लिये इस मूर्ति के हाथ में एक दिया लटका रहता था । इ. स. पू. तीसरी सदी में एक भूकंप के कारण यह मूर्ति तहस-नहस हो गयी ।
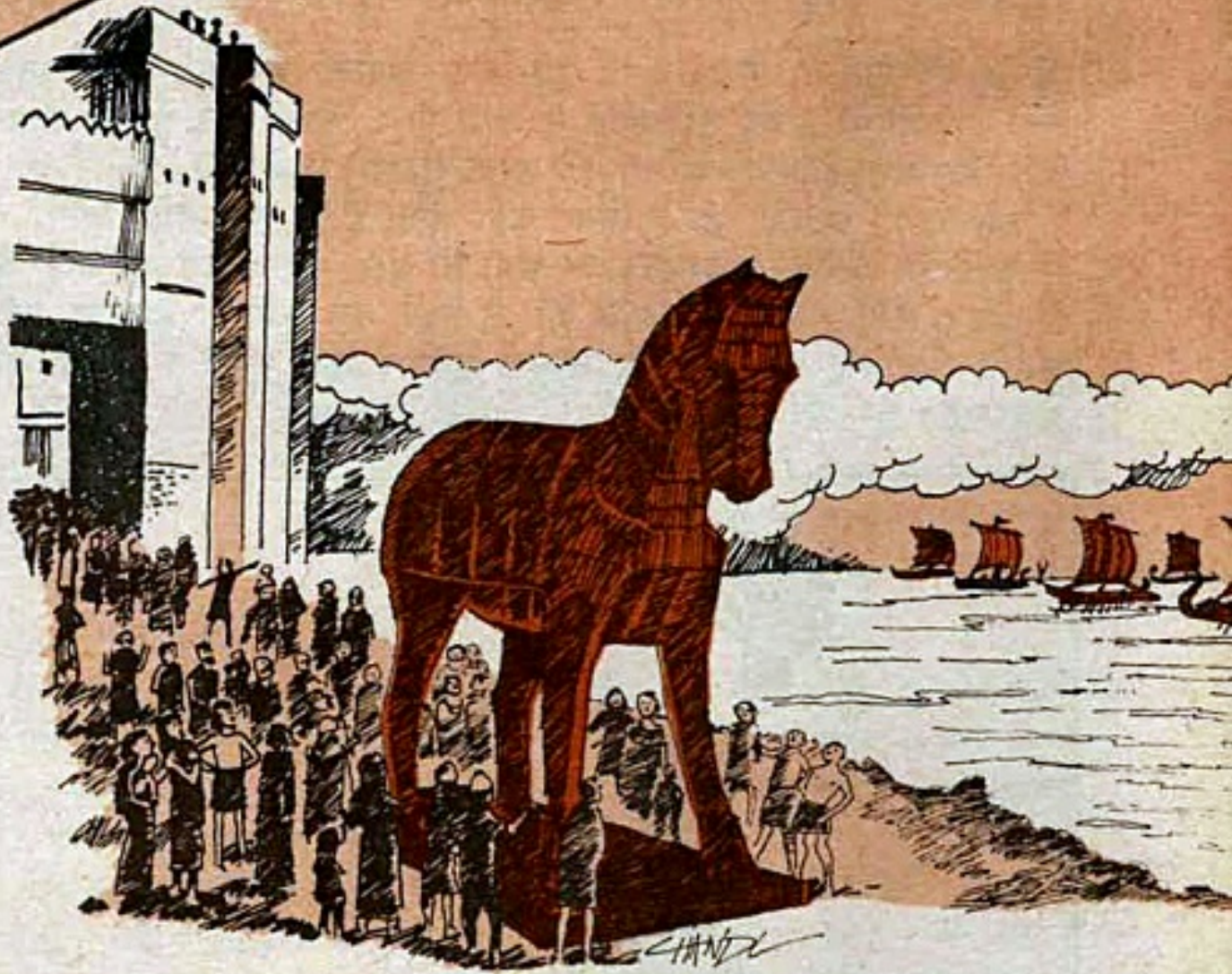
ट्रॉय पर

ई. स. पू. बारहवीं सदी में ग्रीक और ट्रोजन (ट्रॉय की जनता) लोगों में लम्बी लड़ाई छिड़ गयी थी। यह लड़ाई दस साल तक चलती रही और ट्रॉय शहर का पूरा विध्वंस करके ही खतम हुई।

वह सब ऐसा हुआ–किंवदन्ती थी कि सभी स्त्रियों में हेलन सब से अधिक रूपवती थी। ग्रीस के एक प्रान्त स्पार्टा के राजा मिनेलस से उसने विवाह किया था। ट्रॉय का राजपुत्र पॅरिस उसे भगा ले गया। इसलिये ग्रीस के सभी योद्धा इकट्ठा हुए और सब मिलकर समुद्री मार्ग से ट्रॉय के

आक्रमण
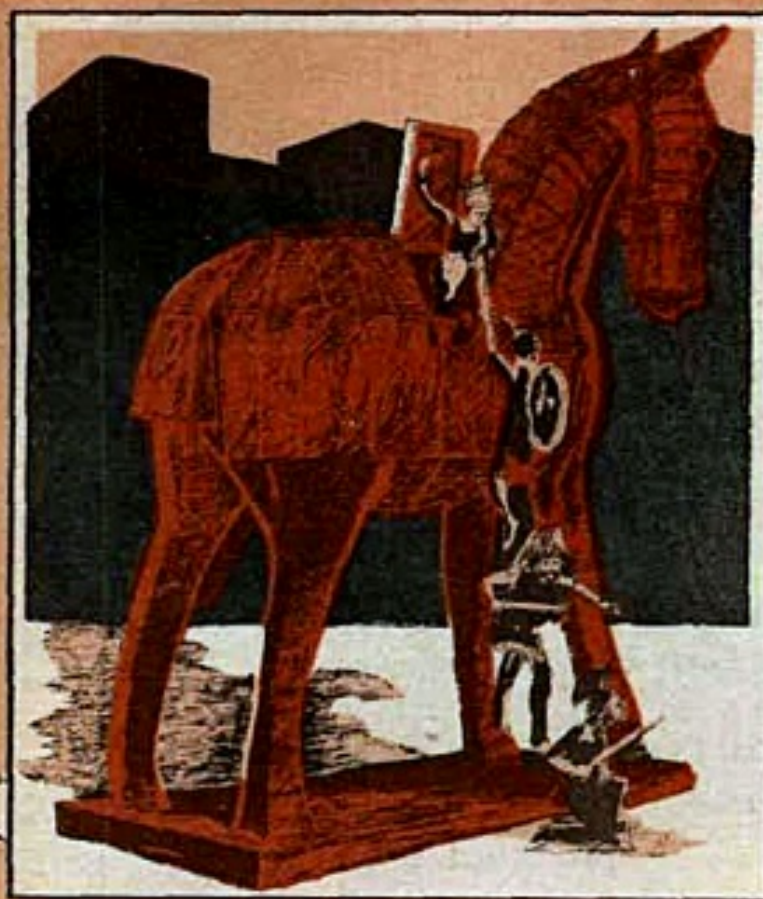
किनारे पहुँच गये। उन्होंने ट्रॉय की राजधानी इलियन पर धावा बोल दिया। जीत का पलड़ा कभी ग्रीक लोगों की ओर झुकता तो कभी ट्रोजन की ओर। इस लड़ाई की घटनाओं का वर्णन प्राचीन ग्रीस के कविवर होमर ने अपने महाकाव्य 'इलियड' (इसका अर्थ है–'इलियन के बारे में') में किया है।

आखिर ग्रीक लोगों ने ट्रोजन के विरुद्ध एक षड्यन्त्र किया। उन्होंने लकड़ी का एक बहुत बड़ा घोड़ा बनाया। उन के कुछ चुने हुए मँजे योद्धा इस घोड़े के अन्दर छिपकर बैठे। ग्रीक सैनिकों ने इस घोड़े को इलियन शहर के सामने छोड़ दिया। उस घोड़े पर ये शब्द अंकित थे– "ग्रीक लोगों ने घर की ओर अपनी सुरक्षित वापसी के लिये अथेना देवी को यह घोड़ा अर्पित किया है।"

ग्रीक सैन्य पास ही के एक टापू तक वापस चला गया, मगर ट्रोजन समझ बैठे कि सचमुच ही ग्रीक लोग हार मानकर वापस गये। वे घोड़े को ढोकर शहर के अन्दर ले आये। रात में उन्होंने अपनी विजय पर रँगरेलियाँ मनाना शुरू किया। इसी बीच ग्रीक सैन्य लौट आया। घोड़े के अन्दर छिपे योद्धा भी बाहर निकले और उन्होंने शहर के दरवाज़े खोल दिये। उन सब ने मिलकर ट्रॉय का सत्यानाश कर दिया। मिनेलस को हेलन वापस मिल गयी।

विश्वास किया जाता है कि, ऐसी लड़ाई सचमुच ही छिड़ी थी। होमर से वर्णित वह स्थान जर्मन पुरातत्त्ववेत्ता हेनरिच स्लीमन ने ढूंढ़ निकाला है। उसने वह प्राचीन इलियन शहर भी ढूंढ़ निकाला। इस खोज से पता चलता है कि, वहाँ ज़रूर एक अच्छी तरह से विकसित संस्कृति का अस्तित्व था।

१. जिनके नाम दो सरोवरों के आधार पर बने हैं ऐसे दो शहर कौन-से हैं ?
   (अ) उनमें से कौन शहर अधिक पुराना है ?
   (ब) उस सरोवर और शहर की नींव किसने डाली ?
   (क) दूसरा शहर किसने बनाया और कब ?

२. एक भारतीय राज्य के राजधानी के मूल नाम का अर्थ है– "पवित्र शाश्वत नगरी." उसका आधुनिक नाम क्या है ?
   (अ) उस मूल नाम का अर्थ-ग्रहण अलग प्रकार से भी हो सकता है। वह अर्थ क्या है ?
   (ब) कितनी पहाड़ियों पर यह शहर बना है ?
   (क) सन् १९४७ के पूर्व वह जिस राज्य की राजधानी थी उसका नाम क्या है ?

३. एक जन-जाती और उसी के नाम पर बने राज्य के नाम का अर्थ है–"पहाड़ों का आदमी"। वह राज्य कौनसा है ?

४. १७ वीं शताब्दी में दिल्ली का एक तत्कालीन नाम था। वह क्या है ?

५. सन् १९८९ में अपना ३५० वाँ जन्म-दिन मनाने जानेवाला भारतीय शहर कौन-सा है ?

विज्ञान, आविष्कार और खोज की दुनिया

१. अॅटलॅंटिस क्या है ? और उसके बारे में किसने लिखा है ?

२. एल्डोरॅडो कहाँ है ?
   (अ) उसका अर्थ क्या है ?
   (ब) यह नाम क्यों प्रचलित हुआ ?

३. पॉलिथिन का उत्पादन कब और कहाँ हुआ ?

४. टेबल-टेनिस का आविष्कार कब हुआ ?

५. क्या कहीं काली जबानवाला कुत्ता है ?

६. क्या हीरा अॅसिड में गल सकता है ?

७. हीरे का नाश कैसे हो सकता है ?

८. पृथ्वी का कितना हिस्सा पानी से ढका है ?
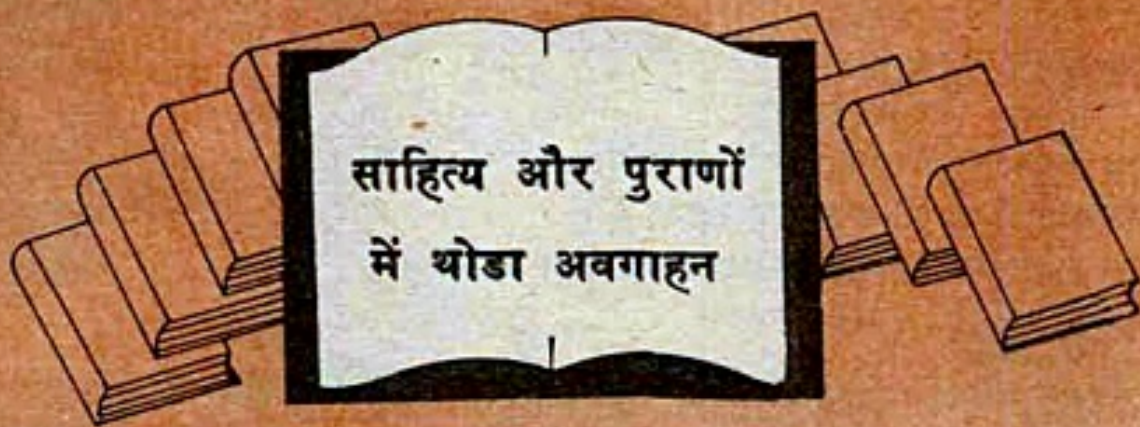
१. प्रचलित भारतीय परंपरा में तीन विनोद-महर्षि कौन हैं ?

(अ) देश के किस राज्य से वे संबंधित थे ?

(ब) परंपरा के अनुसार उनके आश्रयदाता कौन थे ?

(क) उनमें से कौन राज-घराने से संबंधित थे ?

२. दक्षिण के किस ग्रंथ को पाँचवाँ वेद कहते हैं ?

(अ) उसका लेखक कौन था ?

(ब) वह ग्रंथ किस भाषा में लिखा गया है ?

(क) वह लेखक कहाँ और कब रहा ?

३. कौन ऋषी राजा दशरथ का दामाद था ?

(अ) उसकी पत्नी का नाम क्या था ?

(ब) उसकी विशेषता क्या थी ?

४. नारद की वीणा का नाम क्या था ?

.........पृष्ठ आठ देखिए ।

सभी भारतीय भाषाओं का एक शब्द सीख लें !

आसामी : रातिपुआ ; बंगला : सकाल ; अंग्रेजी : मॉर्निंग ; गुजराती : सावर ; हिन्दी : सवेरा ; कन्नड़ : मुंजाने ; काश्मीरी : सुबह ; मलयालम : राविले ; मराठी : सकाळ ; ओरिया : सकाला ; पंजाबी : सवेरा ; संस्कृत : प्रभात ; सिंधी : सुबुह ; तमिल : कालै ; तेलुगु : उदयं ; उर्दू : सुबह.

आपको विश्वास है?

* कि कॅन्सर की बीमारी से कोई कभी मुक्त नहीं हो सकता ।
* कि सब किस्म की बरफ़ गल सकती है ।
* कि इन्द्रधनुष्य कभी पूर्ण वृत्ताकार नहीं देखा जा सकता ।

नहीं, नहीं!

* केवल अमरीका (यु.एस.ए.) में १.५ मिलियन से अधिक लोग कॅन्सर से मुक्त हो गये हैं ।
* सूखी बरफ़ गलती नहीं । उसका वायु में रूपान्तर हो जाता है ।
* देखा जा सकता है, हवाई जहाज़ से ।

उत्तरावली

वह कौन?

सम्राट अशोक ।

इतिहास

१. भोपाल और अमृतसर । भोज-पाल सरोवर से भोपाल नाम बना । उसी नाम के सरोवर से अमृतसर ।

(अ) भोपाल, वह ११ वीं सदी में निर्मित हुआ ।

(ब) राजा भोज ।

(क) चौथा सीख गुरु, रामदास ।

२. त्रिवेन्द्रम । मूल नाम है तिरु-अनन्त-पुरम् ।

(अ) पवित्र सर्प, अनन्त की नगरी ।

(ब) सात पहाड़ ।

(क) त्रावणकोर ।

३. मिझोराम । 'मि' का अर्थ है मनुष्य और 'झो' का अर्थ है पहाड़ ।

४. शहाजहानाबाद । सन १६४८ में शाहजहाँ ने यह नाम दिया । पर यह नाम अधिक समय तक नहीं चला ।

५. मद्रास ।

विज्ञान

१. एक कल्पित टापू जो जिब्राल्टर के परे था ऐसा माना जाता है । प्लेटो ने उसके बारे में लिखा ।

२. सुख-समृद्धिपूर्ण एक भू-भाग, जो लोग मानते हैं कि दक्षिण अमेरिका के परे कहीं था ।

(अ) इसका अर्थ है 'अमीर आदमी' ।

(ब) माना जाता है कि एल्डोरॅडो का राजा सोने के चूर्ण में नहाता था ।

३. मार्च १९३३ में, नॉर्थविच चेशायर में ।

४. इंग्लैण्ड के जेम्स गिब ने, सन १८८८ या १८८९ में । उसके सेट्स् १८९८ में एक व्यापारी कंपनी ने बना लिये ।

५. जबकि अन्य सभी प्रकार के कुत्तों की जबान गुलाबी होती है, सिर्फ़ चाऊ कुत्ते की जबान काली होती है ।

६. नहीं ।

७. सिर्फ प्रखर ऊष्मा कर सकती है ।

८. लगभग ७० प्रति शत ।

साहित्य

१. तेनाली राम, बीरबल, गोपाल भांड ।

(अ) क्रमशः आंध्र प्रदेश, राजपुताना, और बंगाल ।

(ब) कृष्णदेवराय, अकबर और राजा कृष्णचन्द्र ।

(क) बीरबल । वह राजपूत सरदार था । अकबर ने उसे 'राजा' की उपाधि प्रदान की ।

२. तिरुक्कुरल ।

(अ) तिरुवल्लुवर ।

(ब) तमिल ।

(क) (आधुनिक मद्रास का एक भाग) मैलापुर में दो हजार वर्ष पूर्व ।

३. ऋष्यशृंग ।

(अ) राजकुमारी शान्ता ।

(ब) वह पर्जन्य को निमंत्रित करता था ।

४. कच्छपी ।

काव्य कथाएं :

मणिमय नूपुर - ४

पूंपुहार नगरी का युवक व्यापारी कोवलन अपनी पत्नी को छोड़ कर नर्तकी माधवी की संगति में बहुत समय बिताता रहा। जब उसे अपनी भूल मालूम हुई, तब वह पत्नी के पास लौट आया। कण्णगी और कोवलन पूंपुहार नगर को छोड़ कर आजीविका की खोज में मदुरै पहुँचे।

कोवलन को अपनी पत्नी से एक नूपुर मिला जो उसने बेचकर उस धन से एक नया व्यापार शुरू करना चाहा। कोवलन दरबारी स्वर्णकार के पास पहुँचा और उसे नूपुर दिखाया। कोवलन के पास ऐसा अमूल्य नूपुर देखकर स्वर्णकार को आश्चर्य हुआ।

लगभग इसी समय रानी के पैरों का एक नूपुर चोरी गया। सब के मन में संदेह हुआ कि स्वर्णकार ने ही वह नूपुर चुराया होगा। कोवलन के पास उस अमूल्य नूपुर को देख उसी को रानी का नूपुर बताकर स्वर्णकार ने राजा को विश्वास दिलाया कि वह चोर को पकड़वाने में उसकी मदद करेगा।

राजाने स्वर्णकार की बातों पर विश्वास किया और जल्दबाज़ी में अपने सिपाहियों को आदेश दिया कि रानी का नूपुर चुरानेवाले चोर का वध कर दिया जाय ।

राजा के सिपाहियों ने स्वर्णकार के साथ जाकर कोवलन को देखा । उसके पास नूपुर पाकर सिपाहियों ने उसको बंदी बनाया आर राजा के आदेश का पालन किया ।

उधर कण्णगी कोवलन की प्रतीक्षा कर रही थी कि वह धन के साथ लौट आएगा । लेकिन उसको अपने पति की मौत का समाचार मिला । व्याकुल हो रोती हुई वह चिल्ला उठी—"क्या यहाँ भगवान नहीं है? क्या इस नगरी में कोई ईमानदार व्यक्ति नहीं है?"

कण्णगी का क्रोधावेश देखकर नगर की जनता ने उसे चारों तरफ से घेर लिया। उसकी दर्दभरी पुकार सुनकर जनता ने सोचा कि राजा ने कण्णगी के पति के प्रति सचमुच बड़ा अन्याय किया है।

कण्णगी ने राजदरबार में प्रवेश करके अपना दूसरा नूपुर राजा के सामने पेश कर चुनौती दी–"देखिए महाराज, मेरे नूपुर में मोती नहीं, बल्कि माणिक लगे हुए हैं।" उसने नूपुर को फ़र्श पर पटक दिया। उसमें लगे माणिक चारों ओर छितर गये। रानी के नूपुर में मोती लगे थे। राजा को अपने किये का बहुत पछतावा हुआ और उसने उसी क्षण प्राण त्याग दिये।

राजा की मृत्यु से रानी व्याकुल हो गयी और बेहोश हो गिर पड़ी। वास्तव में राजा की मृत्यु इस व्यथा से हुई कि उसने एक निर्दोषी को मृत्युदंड दिया। राजा की मौत के आघात से तिलमिलाकर वह प्राण त्याग बैठा।

इतना होने पर भी कण्णगी का क्रोध शांत नहीं हुआ। उसने तीन बार नगर की परिक्रमा की। उसने सोचा कि अत्याचारी राजा के राज्य में सर्वत्र दुष्ट लोग निवास करते हैं। इसलिए कण्णगी ने शाप दिया कि सारी मदुरै नगरी भस्मीभूत हो जाए।

अचानक सारी नगरी अग्नि की लपटों से भर गयी। पर कण्णगी ने अग्निदेव से प्रार्थना की थी कि वे पवित्र आत्माओं, उत्तम स्त्री-पुरुषों, वृद्धों, बच्चों, विकलांगों और पशुओं की रक्षा करें। इस तरह ये सब ख़तरे से बच गये।

कहते हैं कि पुण्यात्माओं ने कण्णगी और कोवलन को एक उत्तम रथ पर सवार हो स्वर्ग की ओर प्रयाण करते देखा था। कण्णगी उस दिन से एक आदर्श पत्नी के रूप में ही नहीं, एक आदर्श देवी के रूप में पूजित होती है। धर्म और सदाचार की प्रतीक के रूप में आज भी लोग उसे मानते हैं।

पिशाचिनियों की शंका

विद्याधरपुर तथा वैशाली नगर के बीच स्थित घने जंगल में एक पगडंड़ी के किनारे बरगद के पेड़ पर दो नटखट पिशाचिनियाँ रहा करती थीं।

उनमें से एक बूढ़ी थी और दूसरी थी जवान। पगडंड़ी की राह चलनेवाल यात्रियों के चेहरे परखकर उनकी दुर्बलता समझ लेने की कला में बूढ़ी पिशाचिनी निपुण थी और उस दुर्बलता का लाभ उठाकर उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करके उन से अपने मनमुताबिक नाच नचवाने का काम युवा पिशाचिनी करती थी।

एक दिन वे दोनों पिशाचिनियाँ एक वृक्ष की डालपर बैठ कर आपस में कुछ गपशप कर रहीं थीं। उस समय उन के मन में यह सवाल उठा कि आदमी की सब से बड़ी दुर्बलता क्या हो सकती है।

इसपर वृद्ध पिशाचिनी ने अपनी राय यों दी–"जिस दुर्बलता के कारण पूरे समूह को क्लेश पहुँचता है उसी को हम सब से बड़ी दुर्बलता मान सकते हैं।"

लेकिन उस दुर्बलता की परिभाषा के संबंध में दोनों पिशाचिनियाँ एक-मत न हो सकीं और परस्पर वादविवाद करती रहीं। उसी समय उस रास्ते से एक मुसाफ़िर आया।

वृद्ध पिशाचिनी ने उस मुसाफ़िर के चेहरे को सूक्ष्मता से परख कर देखा; लेकिन वह उस यात्री की कमज़ोरी को पहचान न सकी। इसका कारण यह था कि उस यात्री का चेहरा अत्यन्त गम्भीर और निर्विकार था।

वृद्ध पिशाचिनी से जब कुछ कहते न बना, तब युवा पिशाचिनी ने चाँदी के सिक्कों से भरी एक थैली का निर्माण

शैला शर्मा

किया और उसे पगडंड़ी के मध्य में रख छोड़ा। मगर राह गुज़रनेवाले उस यात्री ने थैली नहीं उठायी, बल्कि वह यह कहता हुआ आगे बढा कि–'अरेरे! बेचारा कोई यात्री अपने धन की थैली खो बैठा है।'

यात्री को धन की थैली वैसे ही छोड़कर जाते देख युवा पिशाचिनी की ज़िद दुगुनी हो गयी। तत्काल वह पेड़ पर से उतर पड़ी और एक अपूर्व लावण्यवती का वेष धरकर उसके सामने आ पहुँची।

इसपर भी वह यात्री युवती की ओर ध्यान दिये बिना लापरवाही से आगे बढ़ा। युवा पिशाचिनी यह देखकर अपने पैर में काँटा घुसवाकर चीख उठी और एकदम लुढ़क पड़ी।

यह देख यात्री पीछे लौट आया और उसने युवती के पैर से काँटा निकाल फेंका। दूसरे ही क्षण युवती ने यात्री का हाथ पकड़ लिया और उठकर उससे प्रेमालाप करते हुए बोली–"अहे, आप कितने अच्छे हैं! आप को देखते ही मुझे लग रहा है कि जैसे हमारा जनम जनम का नाता रहा है। मेरे साथ विवाह कर लो न?"

इसपर यात्री खीझकर बोला–"मैं ने तुम्हारे पैर से काँटा निकाला तो मेरे पीछे पड़ी और कोई यह काम करता तो उसके भी पीछे पड़ती। ऐसे प्यार से मुझे नफ़रत है, समझी? चलो, अपना रास्ता नापो।" यह कहते हुए यात्री अपने रास्ते पर अग्रसर हुआ।

निराश होकर लौटी हुई युवा पिशाचिनी को देखकर वृद्धा बोली–"अब तुम देखती रहो, मैं उससे कैसे नाच नचाती हूँ।" कहते हुए वहाँ से अदृश्य हो गयी।

यात्री जहाँ से गुज़र रहा था उस रास्ते के बाज़ूवाली झाड़ी में से–"पानी-पानी" शब्दों में किसी के कराहने की आवाज़ उठी।

यात्री ने रुक कर देखा–झाड़ी में राजा के वेष में एक व्यक्ति पड़ा

हुआ है और उसके बदन पर कई घाव लगे हुए हैं - जिनसे खून रिस रहा है। यात्री ने तत्काल उस व्यक्ति के मुंह में पानी डाल दिया और उसके घाव बांध दिये।

थोड़ी ही देर में राजा तरोताजा हो गया और बोला–"तुम ने मेरे प्राण बचाये हैं। मैं इस देश का शासक हूँ। शिकार खेलने आया और दुर्भाग्य से इस प्रकार घायल हो गया। तुम मेरे साथ राजधानी चलो; अपने दरबार में मैं तुम्हें अच्छा सा पद दे दूंगा।"

"प्यास से तड़पनेवाले व्यक्ति को पानी पिलाना मानवधर्म है। मैं किसी प्रकार के फल की आशा नहीं रखता।" यह कहकर यात्री आगे बढ़ा।

यात्री के चले जाते ही युवा पिशाचिनी राजा-वेषधारी वृद्ध पिशाचिनी के समीप पहुँचकर बोली–"ऐसा लगता है, कि इस यात्री के मन में किसी तरह का मोह नहीं है।"

"सुनो, इस दुनिया में हर एक व्यक्ति के अन्दर किसी न किसी प्रकार की दुर्बलता अवश्य होती है। चलो हम मानव के वेष में उसके पीछे जाकर उसका दौर्बल्य समझने का प्रयत्न करेंगी।" वृद्ध पिशाचिनी ने सुझाया।
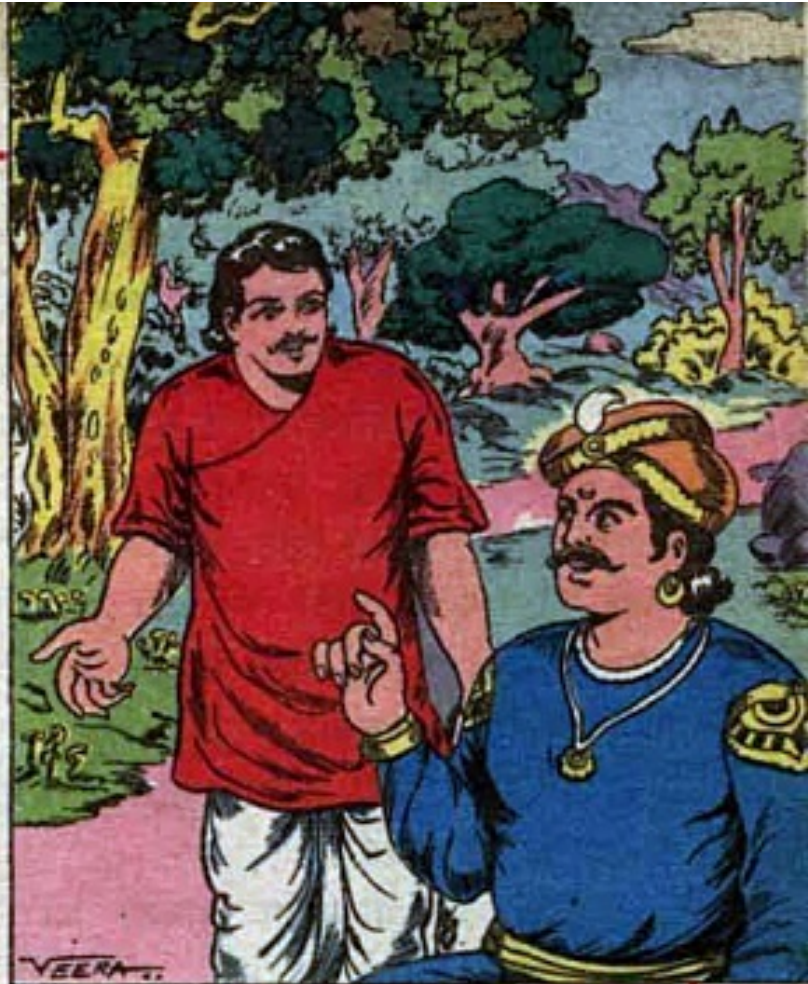
दूसरे ही क्षण दोनों पिशाचिनियां बाप बेटे का रूप धर कर चल पड़ी। उन्हें एक पेड़ के नीचे आराम करता हुआ वह यात्री दीख पड़ा। दोनों पिशाचिनियाँ यात्रियों का अभिनय कर उसके समीप पहुँची और बातचीत का सिलसिला शुरू किया। थोड़ी ही देर में यात्री ने अपनी यात्रा के अनुभव सुनाना शुरू किया।

सारी हक़ीकत सुनाकर उसने पूछा– "तुम ही लोग बताओ, धन के प्रति लालच न रखनेवाला, रूप सौंदर्य पर आसक्त न होनेवाला और यश के प्रति प्रलोभन न रखनेवाला मेरे जैसा आदमी आपने कहीं देखा है?"

पिशाचिनियों ने बड़ी देर तक सब्र से यात्री की कहानी सुनी। मगर यात्री अपने मुंह मियाँ आप मिठ्ठू बनने से अघाता न था। क्रमशः पिशाचिनियों की सहनशीलता जाती रही और उनके पेट में कुलबुलाहट होने लगी, साथ ही उनका दिमाग़ भी भारी होता गया। फिर थोड़ी देर में उनके कानों के पर्दे फटने लगे और आँखों से पानी बहने लगा। अन्त में जब उनकी सहनशीलता ने जवाब दिया, तब वे अचानक अदृश्य हो, अपने निवास बरगद के पेड़ पर पहुँच गयीं।

"उफ़! यह भी कैसा आदमी था। उसने तो हमारा दिमाग ही चाट लिया।" युवा पिशाचिनी ने कहा।

"दिमाग चाट लिया यह कोई बात नही, मगर हमारे सवाल का जवाब तो मिल गया।" वृद्ध पिशाचिनी ने कहा।

युवा पिशाचिनी इस पर आश्चर्य से देखती ही रही।

वृद्ध पिशाचिनी इतमिनान से पेड़ की डाल से सट कर बोली–"देखा न तुमने? आदमी की सब से बड़ी दुर्बलता, आत्म-प्रशंसा करना ही है। किसी व्यक्ति में अन्य कोई दुर्बलता भले ही न हो, मगर उस में अगर आत्मस्तुति करने की प्रवृत्ति है, तो उसके अन्य उत्तम गुणों का भी कोई मूल्य नहीं रह जाता है। किसी दूसरे के उत्तम गुणों की भूरि भूरि प्रशंसा ज़रूर करे, उन को समझने की कोशिश करे, लेकिन किसी को भी आत्मस्तुति कदापि नहीं करनी चाहिए। इस बात की ठीक ठीक समझ न होने के कारण ऐसे लोग दूसरों की दृष्टि में गिर जाते हैं। इस आदमी ने तो सदा दूसरों की खिल्ली उड़ानेवाली हम दोनों को ही अच्छा सबक़ सिखाया।

वृद्ध पिशाचिनी के इस कथन का युवा पिशाचिनी ने सिर हिलाकर अनुमोदन किया। दोनों खुश होकर बरगद के पेड़ पर जा बैठीं।

अपने पिता के घर रहते हुए एक रात श्रीकृष्ण ने किसी समस्या पर गंभीर विचार किया। अपने वंश के लोगों के लिये वैभवपूर्ण द्वारका नगर का निर्माण तो हो गया, परन्तु सुखपूर्वक जीवन बिताने के लिये किसी स्थायी आजीविका का प्रबंध अभी तक नहीं हो पाया है। इसका हल करने के लिये कृष्ण ने शंखनिधि का स्मरण किया। शंखनिधि ने तत्काल प्रत्यक्ष होकर हाथ जोड़कर प्रणाम किया और निवेदन किया–"भगवन्, आप ने मेरा स्मरण क्यों किया? आप का आदेश प्राप्त होते ही मैं उसका पालन करूँगी।"

"हे निधिदेवी! दरिद्र व्यक्ति मृत के समान है। मेरे कुल के अनाथ, और अति दीन-हीन लोगों को देख मेरा मन अशांत है। तुम ऐसा प्रबन्ध करो, जिससे कि, मेरा सब का सब परिवार सुख-समृद्धि से भरा-पूरा हो।" कृष्ण ने उसे आदेश दिया।

"जो आज्ञा।" कहकर शंखनिधि तत्काल अदृश्य हो गयी और जाकर बाकी अष्ट निधियों से मिलकर उसने उन्हें श्रीकृष्ण की कामना का परिचय दिया। उसी क्षण समस्त द्वारका नगरी नवनिधियों से भर गयी। अब उस नगर में कोई दीन-दरिद्र नहीं रहा।

इसी प्रकार किसी संदर्भ में श्रीकृष्ण ने वायुदेव का स्मरण किया। वायुदेव भी प्रत्यक्ष हो श्रीकृष्ण के सामने खड़े हो गये।

१६. रुक्मिणी के विवाह का प्रयत्न

"वायुदेव, बल-पराक्रम में आपका सानी कोई नहीं है। मेरा एक उपकार करो। इन्द्र के लिये विश्वकर्मा ने सुधर्मा नाम के एक सभाभवन का निर्माण किया है। हमारे यादव कुल के सभा-समारोह के लिये भी एक विशाल भवन की आवश्यकता है। इसलिये तुम इन्द्र को मेरी यह इच्छा सुनाकर वह सभा-भवन लाकर यहाँ रख दो।" कृष्ण ने कहा।

वायुदेव ने श्रीकृष्ण की आज्ञा मानकर इन्द्र-लोक में प्रवेश किया। देवताओं को श्रीकृष्ण की कामना का परिचय देकर और उनकी स्वीकृति लेकर वह उस सुधर्मा सभा-भवन को उठाकर द्वारका में ले आया और श्रीकृष्ण को सौंपकर चला गया।

इसी प्रकार समस्त लोकों में स्थित श्रेष्ठतम वस्तुओं को मँगवाकर श्रीकृष्ण ने द्वारका नगर खूब सुशोभित किया। इसी प्रकार शासन का परीक्षण करते हुए श्रीकृष्ण ने प्रमुख पदों पर उचित व्यक्तियों को नियुक्त किया। उस नगर का राज-पद उग्रसेन को दिया गया। इसके बाद राजपुरोहित-पद पर काश्यप नामक ब्राह्मण को, मंत्री-पद विकद्र को और अन्य विविध शासन विभाग दस प्रमुख यादवों को सौंपे गये। दारुक श्रीकृष्ण का सारथी बना। अस्त्र-शस्त्र विद्याओं में द्रोणाचार्य की समता कर सकनेवाले सात्यकी को श्रीकृष्ण ने सेनापति-पद पर नियुक्त किया।

इस प्रकार जनता के जीवन को सुव्यवस्थित रूप देने पर द्वारका नगरी भूलोक के स्वर्ग जैसी सुसंपन्न व सुशोभित लगने लगी।

रैवत नामक व्यक्ति के रेवती नाम की एक सुन्दर कन्या थी। उसके साथ बलराम का विवाह हो गया। तत्पश्चात् श्रीकृष्ण का भी विवाह संपन्न हुआ। उस विवाह की अपनी एक कहानी है।

विन्ध्याचल के दक्षिण में विदर्भ नामक एक देश था। इस में कुंडिन राज्य पर

राजा भीष्मक शासन करते थे। उनके रुक्मि नामक एक पुत्र था। यह रुक्मि एक असाधारण वीर था। उसने द्रुम नाम के गुरु से अनेक शस्त्र, तथा परशुराम से ब्रह्मास्त्र प्राप्त किया था। वह प्रारम्भ से ही कृष्ण के बारे में द्वेष-भावना रखता था।

रुक्मि के रुक्मिणी नामक एक बहन थी। वह अपूर्व सुन्दरी और तेजस्विनी थी। उसकी महानता का संक्षेप में परिचय दिया जा सकता है। वह श्रीकृष्ण के प्रेम का पात्र बनी। मन्मथ ने पुन: उसके गर्भ से जन्म धारण किया। मुनियों ने एक देवी के रूप में उसकी आराधना की। इस से अधिक उसका क्या परिचय दिया जाय?

रुक्मिणी के गुणविशेषों की चर्चा श्रीकृष्ण ने अपने कुछ निकट व्यक्तियों के मुँह से सुनी। इसी प्रकार रुक्मिणी ने भी अनेक लोगों से श्रीकृष्ण के बड़प्पन की कथाएँ सुनी थी। दोनों के हृदयों में एक दूसरे के प्रति अनुराग अंकुरित हुआ। परिणामस्वरूप दोनों एक दूसरे के लिये व्याकुल रहने लगे।

श्रीकृष्ण को पूरा विश्वास था, कि उन्हों ने जिस युवति को अपने मन में वर लिया है उससे वंचित रखने की शक्ति सारे संसार में कोई नहीं रखता। इधर रुक्मिणी भी सदा केवल कृष्ण का ही ध्यान किया करती थी। मगर रुक्मि को वह कतई पसन्द नहीं था। उसका विचार था, कि नन्द गोप के यहाँ गायें चरानेवाले के साथ हमारे वंश का रिश्ता कैसे संभव है?

इसी समय मगध देश के गिरिव्रजपुर के राजा जरासन्ध ने रुक्मि के पास संदेश भेजा, कि वह अपनी बहन रुक्मिणी का विवाह शिशुपाल के साथ कर दे। शिशुपाल जरासन्ध का पालित पुत्र था। वास्तव में शिशुपाल का पिता दमघोष; और उसकी माँ श्रुतश्रवा वसुदेव की बहन थी। दमघोष तथा जरासंध ज्ञाती थे,

इसलिये जरासन्ध की माँग पर दमघोष ने अपने चार पुत्रों में से ज्येष्ठ पुत्र शिशुपाल उसको दत्तक दिया था।

शिशुपाल का दूसरा नाम था सुनीघ। जरासन्ध का संदेश पाकर रुक्मिणी के पिता भीष्मक ने शिशुपाल के साथ रुक्मिणी का विवाह संपन्न करने के लिये स्वीकृति दी। वास्तव में राजा भीष्मक रुक्मिणी का विवाह श्रीकृष्ण के साथ करने के पक्ष में थे; मगर वे जानते थे कि उनका पुत्र रुक्मि श्रीकृष्ण से वैमनस्य रखता है। रुक्मि ने अपनी बहन रुक्मिणी का विवाह शिशुपाल के साथ करा देने की इच्छा प्रकट की। अपने पुत्र को भीष्मक अप्रसन्न नहीं करना चाहते थे इसलिये उन्हों ने अनिच्छा पूर्वक ही यह स्वीकृति दी थी।

अपनी इच्छा की पूर्ति होते देख प्रसन्न होकर जरासन्ध ने अपने रिश्तेदारों तथा मित्रों के नाम शुभ-विवाह के निमन्त्रण-पत्र एवं संदेश भेज दिये। अंग, वंग, कलिंग, पौण्ड्र, पांड्य, काश, करुश आदि अनेक राजा विवाह में सम्मिलित होने के लिये चल पड़े। शिशुपाल के साथ चलनेवाले लोगों में करुश राजकुमार, पौण्ड्रक वासुदेव, एकलव्य का पुत्र वीर्यवन्त, दन्तवक्त्र का पुत्र सुवक्र तथा अन्य अनेक राजकुमार भी थे। इस प्रकार सारे दल-बल के साथ जरासन्ध कुंडिन नगर में आ पहुँचे।

रुक्मि ने भी अनेक रथों, हाथियों तथा घोड़ों के साथ अगवानी करके जरासन्ध का स्वागत किया। उसका यथोचित सत्कार करके उसके निवास का प्रबंध किया।

पुरोहितों ने शुभमुहूर्त देखकर अगले दिन के लिये ही लग्न तिथि निश्चित की। तत्काल सारे नगर में ढिंढ़ोरा पिटवा दिया। समस्त राजाओं ने अपने ओहदे के अनुरूप अपनी सेनाओं को सुसज्जित किया। शिशुपाल वर के वेष में अपने मित्रों के साथ अत्यंत उल्लास का अनुभव कर रहा था।

लगभग इसी समय द्वारका में नारदमुनि आ पहुँचे। गोरा शरीर, स्वर्णिम वर्ण में सुशोभित जटाबंध, देहपर धारण किया गया चर्म, सिरपर मयूर पंखों का छत्र, वायु के आघात से प्रकंपित वीणा–इस आकृति को द्वारकावासियों ने विस्मयपूर्वक देखा। नारद के आने का समाचार सुनकर महाराजा उग्रसेन, वसुदेव, कृष्ण-बलराम तथा अन्य प्रमुख यादवों ने आगे बढ़कर नारद का स्वागत किया और उन्हें सादर लिवा लाकर सुधर्म सभाभवन में एक स्वर्णिम आसन पर बिठाया तथा अर्घ्य-पाद्य आदि से सत्कार किया।

कृष्ण ने सब को उचित आसनों पर बिठाया और खुद भी अपने आसन पर बैठ गये। फिर बोले–"नारद, तुम सकुशल हो न? सारे जगत् के लोग और देवता कुशल हैं न?"

खुश होकर नारद बोले–

"आप के स्मरण मात्र से प्राणियों का शुभ हो जाता है। सभी युगों में सदा सर्वदा आपही की चरण-सेवा में लगे हुए हम जैसे लोगों के कुशल क्षेम पूछने की आवश्यकता ही क्या?"

यों उत्तर देकर नारद ने अपनी वीणा की तंत्रियों को झंकृत कर कृष्ण को प्रसन्न करने के लिये अत्यन्त मधुर स्वर में आलाप किया। मत्स्य अवतार से लेकर रामावतार तक के सारे अवतारों की गाथाओं का सुमधुर गायन उसने किया। इसके बाद

बस, अब बताओ, तुम्हारे यहाँ आने का कारण क्या है। तुम अकारण तो कहीं जाते नहीं, यह बात सर्व-विदित है।"

इसपर नारद ने अपने आने का कारण इस तरह कहा–

"दक्षिणी समुद्रतट पर गोकर्ण नामक एक दिव्य पुण्यतीर्थ है। वहाँ शिवशंकर दिव्य लिंगाकृति में विद्यमान हैं। उस ईश्वर के समक्ष मैं ने वीणा-वादन किया, उसका संकीर्तन किया, भक्तिपूर्वक पूजा-अर्चा की और वहाँ से कुबेर के दर्शन के लिये चल पड़ा। बीच मार्ग में मैं ने कुंडिनपुर के राजा भीष्मक के दर्शन किये। भीष्मक ने मेरा समुचित स्वागत-सत्कार किया और मुझे संतुष्ट किया। वहाँ मैं ने जरासन्ध से लेकर पृथ्वी पर निवास करने-वाले सभी राजाओं को देखा। मैं ने भीष्मक से पूछा–"ये सब लोग यहाँ किस प्रयोजन से पधारे हुए हैं?" भीष्मक ने उत्तर में कहा–"मै अपनी पुत्री रुक्मिणी का विवाह चेदि-राजा शिशुपालके साथ संपन्न कर रहा हूँ। कल प्रातःकाल ही विवाह का मुहूर्त निश्चित है।" मैं यह समाचार आप को देने के लिये ही यहाँ आया हूँ।"

नारद ने आगे कहा–"आपने अपने मन में रुक्मिणी की कामना की है। परन्तु

कृष्ण की बाल-लीलाओं, उसकी साहस-पराक्रम की विविध कथाएँ, गोवर्धनोद्धारण, कंसवध इत्यादि कृत्यों की प्रस्तुति में गायन किया। नारद के गीत सुनकर सब द्वारकावासी तन्मय हो उठे। नारद के गीतों के आराध्यदेव श्रीकृष्ण द्वारकावासियों के सखा-मित्र व प्रियतम नेता बने इस बात पर उन्हें आनन्द हुआ। गीत समाप्त कर नारद ने वीणा एक तरफ रख दी और इसके बाद उसके मुंह से सुख-संवाद सुनने के लिये लोग आतुर हो उठे।

श्रीकृष्ण ने मुस्कुराकर नारद की और दृष्टि दौड़ायी और कहा–"नारद, तुम ने मेरी समस्त लीलाओं का परिचय दिया।

भीष्मक ने तो उसका विवाह आप के शत्रु के साथ निश्चित किया है। यह विवाह निर्विघ्न संपन्न हो सकता है। मगर आप ही विचार करके देखिये, अगर ऐसा हुआ तो आप का कितना अपयश होगा! इसलिये अब आप एक काम कीजिये! महाराज उग्रसेन, सात्यकी तथा अन्य महान् योद्धाओं को साथ लेकर प्रस्थान कीजिये। वहाँ उपस्थित सभी राजाओं और उन के सैनिकों को मार भगाकर उस कन्या को उठा लाइये। आप के हाथ सुदर्शन चक्र के होते आप के लिये कोई भी कार्य असंभव नहीं है। एक बात और सुनिये, मैं ने अदृश्य रूप में गगन-मार्ग से प्रयाण करते हुए देखा कि, रुक्मिणीं राजोद्यान में अपनी सखियों के बीच बैठकर आँसू बहा रही थी। मुझे तो ऐसे लगा कि वह सदा आप ही का स्मरण करती है, आपके दर्शनों के लिये लालायित है और आप को पाने के लिये अत्यंत आतुर है। आप के ध्यान-स्मरण के बिना उसके मन में और कोई विचार ही नहीं है। बेचारी उस कन्या की स्थिति का वर्णन ही मैं नहीं कर सकता! उसके चिकने कपोल आँसुओं से तर हैं; उसकी माँग छितरी हुई व बाल बिखरे हुए हैं! ऐसा प्रतीत होता है कि किसी निश्वास के साथ उसके प्राण न निकल जायें। उसकी देह कंपित है और उसकी सखियाँ उसके उपचार में लगी हुई हैं। मगर उनके उपचारों का कोई उपयोग नहीं हो रहा है। रुक्मिणी कह रही थी कि उसकी सखियाँ आप का नाम छोड़कर किसी और का नाम मुँह में लाये तो वह मर जायेगी। उसकी यह हालत देखकर कठोर से कठोर व्यक्ति का दिल भी पिघल जाएगा। आप तो स्वभाव से ही करुणा-सिन्धु हैं। आप अब चुप नहीं रहिये, उस रुक्मिणी के प्राण किसी तरह से बचाइये। आप का यह प्रमुख कर्तव्य है। अब मैं बिदा लेता हूँ, आज्ञा दीजिये।"

इतना वृत्तान्त सुनाकर नारद अपने रास्ते चल पड़ा।

चोर पकड़ा गया

रामकुमार और श्यामकुमार दोनों बचपन के साथी व मित्र थे । बचपन में ही दोनों अपना गाँव छोड़कर कोटद्वार नामक बस्ती में जा बसे । रामकुमार ने वहाँ नारियल की दूकान खोल दी, और श्यामकुमार एक साहूकार के यहाँ नौकरी पर लग गया ।

एक दिन दोपहर श्यामकुमार रामकुमार की दूकान पर पहुँचकर बोला, "रामू, मैं तुम से एक मदद चाहता हूँ ।"

"कहो, कैसी मदद चहते हो तुम ?" रामकुमार ने पूछा ।

"बात यह है कि मुझे अभी अभी समाचार मिला है कि मेरी पत्नी ने एक बच्ची को जन्म दिया है । मैं अपनी बेटी को देखने ससुराल जा रहा हूँ । मगर इसी बीच मुझे और एक ख़बर मिल गयी है कि, हमारे गाँव से सटकर जो नदी है, उस में बाढ़ आ गयी है । अब मेरे माता-पिता, जो मुझे देखने गाँव से चल पड़े हैं, वे कब तक यहाँ पहुँच जायेंगे कह नहीं सकता । रात बीते अगर वे यहाँ पहुँच जायेंगे तो घर पर ताला पड़ा देखकर वे परेशान हो जयेंगे । इसलिए आज रात तुम मेरे घर में सो जाओ । मैं सबेरे तक लौट आऊँगा ।" इतना कहकर श्यामकुमार ने अपने घर की चाभी रामकुमार के हाथ थमा दी ।

"दोस्त, तुम घर की फ़िक्र न करो । मैं आज शाम को ज़रा जल्दी ही खाना खाकर तुम्हारे घर सोने चला जाऊँगा ।" श्यामकुमार ने हामी भर दी ।

इसके बाद श्यामकुमार वहाँ से चल पड़ा । रामकुमार जब दूकान से अपने घर पहुँचा तो देखता क्या है, उसकी पत्नी चादर ओढ़े पैर सिकोड़ कर पड़ी क़राह रही है । उसे तेज़ बुख़ार चढ़ा हुआ था ।

शीला अग्रवाल

रामकुमार तुरन्त जाकर वैद्य को बुला लाया। वैद्य ने कुछ गोलियाँ दीं और सबेरे तक तीन बार निगलवाने की सलाह दे गया। इसी में रामकुमार को श्यामकुमार के मकान की बात याद आ गयी। लेकिन अब दिक्कत यह थी कि, वह अपनी पत्नी को घर पर अकेली छोड़कर श्यामकुमार के घर सोने नहीं जा सकता था।

वह सोच ही रहा था कि अब क्या किया ज़ाय, तो अचानक उसे आदित्य नाम के एक युवक की याद आयी, जो हाल ही में श्यामकुमार के घर के सामने के घर का किरायेदार बन कर आ गया था। वह अविवाहित था।

रामकुमार ने उसके घर जाकर कहा, "देखो भाई, मैं तुम्हें थोड़ी तकलीफ़ देना चाहता हूँ। क्या तुम आज रात श्यामकुमार के घर में सो सकते हो?"

रामकुमार की बात सुनकर आदित्य मुस्कुराकर बोला, "अरे, इस में क्या बड़ी बात। पड़ोस-धर्म तो निभाना ही पड़ता है न। इस में कैसी तक़लीफ़?" इतना कहकर उसने रामकुमार से श्यामकुमार के घर की चाभी ले ली।

दूसरे दिन सूर्योदय तक रामकुमार की पत्नी का बुख़ार उतर गया। इसलिए वह आदित्य से चाभी वापस लेने श्यामकुमार के घर पहुँचा। उसने दरवाज़े पर दस्तक दी। दोनों किवाड़ सिर्फ़ सटे हुए थे, वे अचानक खुल गये। घर के भीतर का दृश्य देख रामकुमार चकित रह गया।

आदित्य एक खंभे से बंधा हुआ था। घर
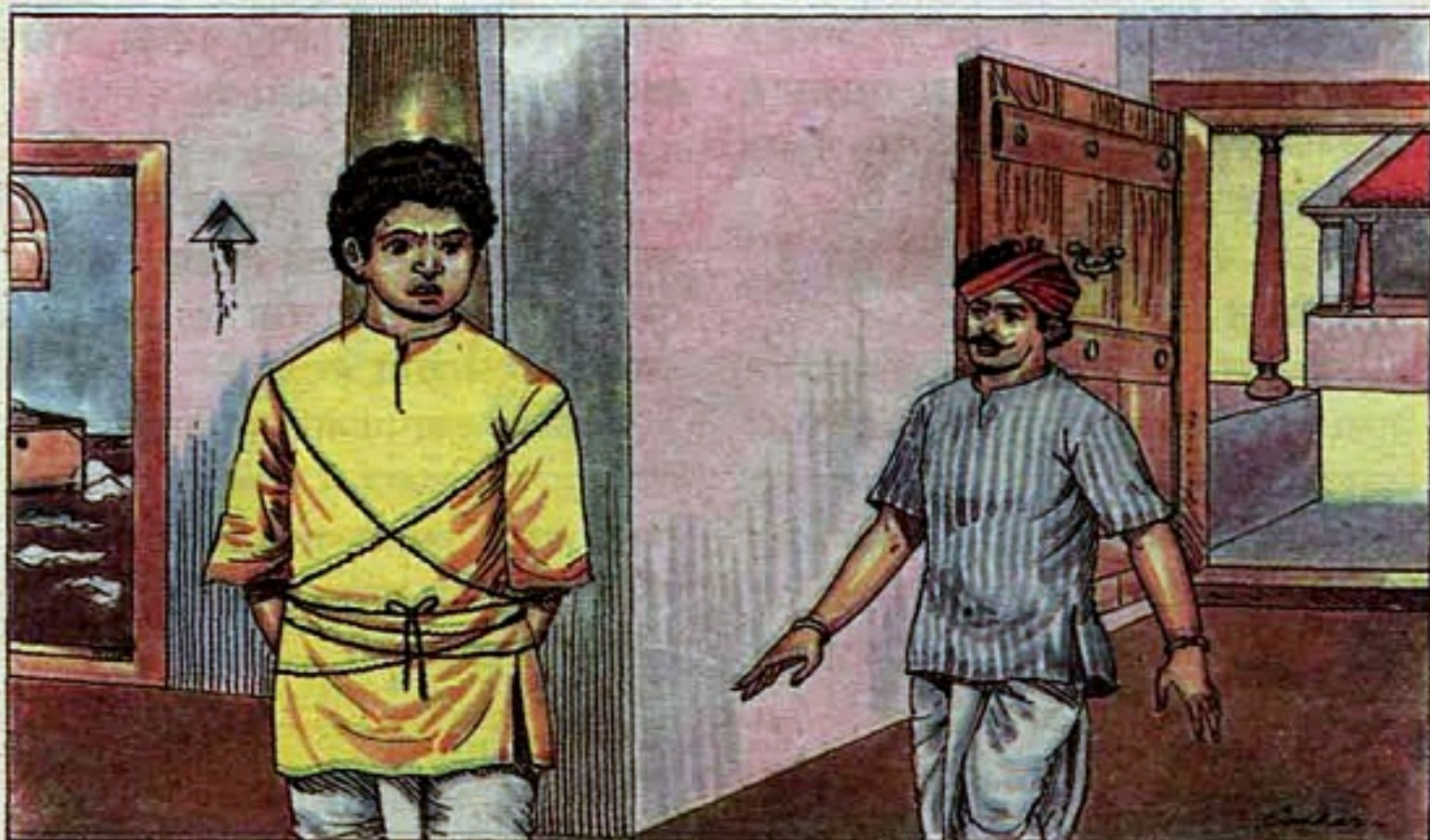
का सामान तितर-बितर पड़ा हुआ था । रामकुमार ने आगे होकर पहले आदित्य के मुँह में ठूँसा हुआ कपड़ा निकाल कर उसके बंधन खोल दिये । बंधन खुलते ही आदित्य इस तरह ज़मीन पर लुढ़क पड़ा मानो वह निर्जीव हो ।

रामकुमार ने उसे सावधान करते हुए हाल पूछा ।

जवाब में आदित्य ने कहा, "क़रीब आधी रात गये दरवाज़े पर दस्तक की आवाज़ हुयी । मुझे लगा कि श्यामकुमार के माँ-बाप ही आये होंगे । इसलिए बिना कोई पूछताछ किये मैं ने दरवाज़ खोल दिया । सहसा एक डाकू आगे होकर मेरी छाती पर छुरी टिकाकर मुझे खम्भे के पास ले गया और उससे बाँध दिया । मैं चिल्लाने को हुआ तो डाकू ने मेरे मुँह में कपड़ा ठूँस दिया । मैं डर से और साँस घुटने से बेहोश हो गया ।"

यह समाचार सुनकर रामकुमार आवाक् हो गया । उसने सोचा कि, देखें डाकू क्या क्या चुरा ले गया होगा । तभी श्यामकुमार ने घर में प्रवेश कर के पूछा, "दोस्त, बोलो क्या हुआ ?"

रामकुमार के जवाब देने के लिए मुँह खोलने से पहले ही संदूक खुला देखकर श्यामकुमार ने तलाशी लेना शुरु किया । उसने आँखों में आँसू भरकर, "पाँच सौ रुपये और चाँदी का मेरा सारा सामान चोरी हो गया है ।" कहते कहते वह रामकुमार के पास पहुँचा ।

आदित्य का परिचय देते हुए रामकुमार ने श्यामकुमार को सारा ब्योरा सुनाया ।

पहुँचा। वार्तालाप के सिलसिले में रामकुमार ने श्यामकुमार के घर की चोरी का उल्लेख किया और यह भी कहा कि, वह इस मामले में खुद को कैसे अपराधी महसूस कर रहा है।

दारोगा जनार्दन ने सारी कहानी सुनकर पूछा, "यह बताओ रामकुमार, क्या आदित्य सचमुच विश्वासपात्र व्यक्ति है ?"

"वह तो हाल ही में नया नया श्यामकुमार के घर के सामनेवाले मकान का किरायेदार बनकर आया है। दिखने में तो भला लगता है, मगर मैं उसके बारे में कुछ ज़्यादा जानकारी नहीं रखता।" श्यामकुमार ने जवाब में कहा।

पल दो पल मौन रहकर जनार्दन कुछ सोचता रहा, और फिर उसने पूछा, "डाकू ने आदित्य को खंभे से बाँध रखा था न, तो कहो उस रस्सी की गाँठ आगे की ओर थी कि पीछे की ओर? बताओ, तुम्हीं ने तो खोला था न उसे ?"

"मुझे अच्छी तरह से याद है, रस्सी की गाँठ आदित्य के ठीक पेट पर थी।" रामकुमार ने जानकारी दी।

जनार्दन मुस्कुराकर बोला, "तब तो बात खुल गयी है - असली चोर तो खुद आदित्य ही है। उसने अपने आप को रस्सी से बाँध लिया था, इसलिए तो गाँठ आगे की ओर थी। यदि किसी और डाकू की यह करतूत होती, तो यह, कि कोई बाहर का चोर होता, तो वह गाँठ ज़रूर पीछे बाँध देता। और दूसरी बात यह, कि कोई बाहर का चोर होता तो दरवाज़ा सिर्फ

श्यामकुमार ने कहा, "इस में तुम्हारा कोई दोष नहीं है दोस्त। यह सब तो मेरे ही प्रारब्ध की बात है।"

इस घटना के बाद रामकुमार इस विचार से व्याकुल रहने लगा कि इस की सारी ज़िम्मेदारी उसी की है। न उसी रात पत्नी को बुखार होता और न यह चोरी हो जाती।

वह जब अपनी पत्नी से कहता, "मेरी असावधानी के कारण ही श्यामकुमार क़रीब दो दज़ार रुपये की संपत्ति से हाथ धो बैठा। मैं जब तक उसे कुछ न कुछ न दूँ, तब तक मेरे मन को शान्ति न मिलेगी।"

इन्हीं दिनों रामकुमार का एक रिश्तेदार जनार्दन उसी गाँव के थाने का दारोगा बनाकर आया। एक दिन यह दारोगा रामकुमार के निमन्त्रण से उसके घर रात का खाना खाने

सटाकर नहीं रखता, बल्कि बाहर से कुंडी चढ़ा देता ।"

"तुम्हारा कहना तो सौ फ़ी सदी सच लगता है, लेकिन यह साबित कैसे किया जा सकता है ?" रामकुमार ने शंका प्रदर्शित की ।

इसपर वह जनार्दन को एक उपाय बताकर चला गया ।

दूसरे दिन रामकुमार ने आदित्य से भेंट कर के कहा, "सुनो, भाई, श्यामकुमार ने अपने घर में हुयी चोरी के बारे में पहली ही रपट दी थी । रात में गश्ती-वाले सिपाहियों ने एक डाकू को पकड़ लिया है । लेकिन सुनते हैं कि वह पागल जैसा बर्ताव कर रहा है । उनका संदेह है कि वह स्वांग रच रहा हैं। तुम को थाने में जाकर उसको पहचानना होगा । तुम्हीं ने तो उसको देखा है न ?"

आदित्य रामकुमार के साथ ही थाने में गया, वहाँ बावरे जैसे आदमी को देखकर वह बोला, "इसी ने उस रात छुरी दिखाकर मुझे डराया और खम्भे से बाँध कर सारा घर लूट लिया था । आखिर चोर पकड़ा गया है ।"

उसी समय पागल जैसा अभिनय रचने वाले जनार्दन ने झपटकर आदित्य की गर्दन पकड़ी और बोला, "यह बात सच है कि चोर हाथ में आ गया है । लेकिन वह चोर कोई और नहीं तुम ही हो । बताओ, तुम को मैं बिच्छू और साँप वाली कोठरी में बन्द करूँ या सच्ची बात बताकर चोरी का माल सौंप दोगे ?"

जनार्दन की बातें सुनकर आदित्य का शरीर काँप उठा । उस ने तुरन्त अपना अपराध स्वीकार किया । इसके बाद एक सिपाही के साथ आदित्य अपने घर गया और चोरी के माल के साथ थाने लौट आया । चाँदी का सारा सामान ज्यों का त्यों सुरक्षित था, लेकिन पाँच सौ रुपये नक़द की जगह चार सौ ही थे ।

इसके बाद दारोगा जनार्दन ने सिपाहियों को आदेश दिया कि आदित्य को सीकचों के पीछे बन्द करें और श्यामकुमार को इसकी ख़बर पहुँचा दे ।

श्यामकुमार ने अपनी खोयी संपत्ति पाकर खुशी ज़ाहिर की और कहा, "यह सब मेरी बेटी के जनम का सुयोग है ।"

तांबे के तीन सिक्के

किसी शहर में चाँग नामक एक तमाखू का व्यापारी था । वह बँहगी के दोनों पलड़ों में तमाखू रख कर शहर की गलियों में चिल्ला- चिल्लाकर बेचा करता था । लोगों से खचाखच भरी गलियों में से गुज़रते हुए उसे अपना माल बेचना पड़ता था । उसका माल गली-कूचियों में बिकता न था ।

एक दिन सबेरे चाँग अपने कन्धेपर बहँगी लिए भीड़ को चीरता हुआ गुज़र रहा था, तब चीथड़े पहना हुआ एक बृध्द चाँग के कंधे पर थपकी देकर उसको रोकते हुए बोला, "बेटा, क्या तुम मेरी चिलम में तमाखू भर दोगे ?"

चाँग ने इधर उधर नज़र दौड़ाकर देखा लेकिन बहँगी उतारकर रखनेलायक़ जगह उसे कहीं दिखाई न दी । चांग ने बूढ़े से माफ़ी मांगते हुए नम्रशब्दों में निवेदन किया- "तुम खुद देख ही रहे हो, यहाँ पर न रुकने की जगह है और न मैं तुम्हें तमाखू दे सकता हूँ ।" यह कह कर वह तेजी के साथ आगे बढ़ने लगा इस पर बूढ़े ने ताँबे के तीन सिक्के दिखाये वास्तव में चिलमभर तमाखू के लिए यह मूल्य ज़्यादा ही था ।

"बाबा, इस भीड़ में बहँगी उतारना मेरे लिए मुमक़िन नहीं है । मैं थोड़ी देर के लिए यहीं पर रुक जाता हूँ । तुम बुरा न मानो, मेरी बात मानकर तुम ही अपने चिलम में तमाखू भर लो न ।" चाँग ने कहा ।

बूढ़े ने अपने अँगूठे व अनामिका की चिऊँटी भरकर तीन बार तमाखू निकाला और चिलम में भर दिया । चाँग को इस बात का आश्चर्य रहा कि इतने छोटे से चिलम में इतना सारा तमाखू कैसे भर गया ? लेकिन फिर भी चिलम पूरा भरा नहीं था । चांग आश्चर्य में आकर देखता रहा । फिर सोचने लगा यह सौदा तो घाटे का रहा । लेकिन उसने बूढ़े की बात मान ली थी, इसलिए वह अपने

भारत भूषण

वचन से मुकरना नहीं चाहता थ । भले ही उसे नुक़सान क्यों न हो, इस बीच बूढ़े ने पलड़े का सारा तमाखू किसी तरह चिलम में भर दिया ।

चाँग इस धोखाधड़ी पर चकित हो, कभी बूढ़े की ओर तो कभी पलड़े की ओर तांकता रहा ।

पलड़े का सारा तमाखू चिलम में भरने पर बूढ़े ने ताँबे के वे तीन सिक्के डाल दिये, फिर तमाखू सुलगा कर उस से कश लेते हुए भीड़ में ओझल हो गया । हताश चाँग व्याकुल होता हुआ घर की ओर चल पड़ा ।

लेकिन रास्ते में आगे बढ़ते समय उसे लगा कि बहँगी भारी होती जा रही है । उस ने मन ही मन सोचा - 'कहावत भी है, जो दर सही मूल्य का नहीं होता, वह बेकार का बोझ बन जाता है ।' लेकिन शनै शनै बहँगी का पिछला पलड़ा बराबर भारी होता गया और उसे लाचार होकर बहँगी को रास्ते के एक किनारे उतारना पड़ा ।

बहँगी उतारकर वह देखता क्या है । पिछले पलड़े में एकदम ताँबे के सिक्के भरे पड़े हैं । चाँग के देखते देखते भी सिक्कों की संख्या बढ़ती ही रही । उसने झट अपने दोनों हाथों से पलड़े को संभाला और तेज़ कदमों से घर आ पहुँचा ।

घर की देहली से टकराकर चाँग नीचे गिर पड़ा और पलड़े के सारे सिक्के तितर बितर हो चारों तरफ़ फैल गये । उसकी साँस फूल रही थी, फिर भी चाँग ने जल्दी जल्दी सिक्के बटोर कर एक लकड़ी के बक्से में भर दिये ।

इसके बाद वह घर से बाहर निकला और

इत्मिनान से साँस लेकर वह बीती हुयी घटना के बारे में विचार करने लगा । थोड़ी ही देर में उसे घर के भीतर से 'टन टन' की आवाज़ सुनायी दी । उसने अन्दर जाकर देखा सन्दूक का ढक्कन ऊपर उठ रहा है और उस में से ताँबे के सिक्के उछल उछल कर नीचे गिर रहे हैं । क्रमशः उनकी संख्या बढ़ती ही जा रही थी ।

चाँग नाक रगड़ते हुए सोच में पड़ गया । आख़िर वह धान भरने की एक भारी कुठली उठा लाया और सारे सिक्के उस में भरने लगा । आख़िर भरते भरते वह कुठली भी भर गयी ।

इस प्रकार शाम तक तीन कुठलियाँ भर गयीं । उस दिन चाँग को दम लेने की भी फ़ुर्सत न मिली ।

इतना सारा धन पाकर चाँग पूर्ण रूप से संतुष्ट हो गया । अब इस वक़्त वह अच्छा-ख़ासा धनवान बन गया था । अब गली-कूचियों में फेरी लगाकर तमाखू बेचने की ज़रूरत न रही । उसने गिरवी का धंधा शुरु करना चाहा । ठाठ से दूकानपर बैठकर दूसरों के सामान गिरवी रखवा लेकर धन देने के सिवा अब उसे कोई काम करने की ज़रूरत न रही

उसने गिरवी का धन्धा शुरु किया और प्रारम्भ से ही उसका सितारा बुलन्द रहा । लेकिन आश्चर्य की बात थी कि लोगों को पैसा देने पर भी ताँबे के सिक्कों की संख्या बढ़ती ही जा रही थी ।

एक दिन उसकी दूकान पर कोई एक बूढ़ा आया और उसने अपनी कुछ चीज़ें बेचने की इच्छा प्रकट की । पर वे चीज़ें कोई ख़ास मूल्यवान न थीं । चाँग ने उन चीज़ों को उलट पलट कर देखा और पूछा - "बताओ, इस का क्या मूल्य है ?"

बूढ़े ने झट कह दिया, "मुझे सिर्फ़ ताँबे के तीन सिक्के दे दो ।" चाँग ने बूढ़े के हाथ ताँबे के तीन सिक्के धर दिये, और उसी क्षण से चाँग की पेटी में धन का बढ़ना बन्द हो गया ।

बदल गई

किसी नगर में एक संपन्न परिवार में एक सुंदर कन्या रहा करती थी। सौभाग्य से एक अच्छे व्यक्ति के साथ उसका विवाह हो गया। वह पड़ोस के प्रदेश में रहनेवाला एक सुंदर और धनी युवक था। दोनों एक दूसरे के अनुरूप थे। दोनों के माता-पिता को ऐसा रिश्ता पाकर बड़ा संतोष हुआ।

उनके वैवाहिक जीवन के शुरु के कुछ साल बड़े आनन्द में बीते। लेकिम शीघ्र ही उनके जीवन में दुख का पहाड़ टूट पड़ा। एक दिन अचानक पति के मन में क्या सूझा। चुपचाप वह बाजार गया। एक चरखा और टोकरी भर पूनियाँ ले आया, और पत्नी के सामने रख कर बोला- "सुनो, आज से तुम इस चरखे पर सूत कातोगी। ये टोकरी भर पूनियाँ हैं। ध्यान रखो, धागा पतला और मज़बूत रहे। धागा मोटा और टूटा हुआ रहा तो मुझे बड़ा क्रोध आएगा। समझी।"

आश्चर्य में आकर पत्नी ने पूछा- "अब क्या मुझे रोज़ाना सूत कातना पड़ेगा?"

पति ने जवाब दिया-- "हाँ, तुम्हारे हाथ से कते धागे से ही मैं अपनी धोतियाँ और गमछे आदि बुनवा लूँगा।"

"पर मैं तो सूत कातना जानती नहीं। हमारे घर में कोई नहीं जानता। आख़िर यह बताओ, सूत कातने की जरूरत क्या है? तुम्हारे लिए कितने कपड़े चाहिए? हम दूकान से ख़रीद सकते हैं। इतनी सारी मेहनत करने की क्या ज़रूरत है? अब सीख कर कातने में भी काफी दिन लग जायेंगे। उलटे हमारा बहुत सा समय भी बरबाद होगा।" पत्नी ने अपनी कठिनाई पेश की।

सब कामों में कुशल अपनी पत्नी के मुँह से यह सुनकर कि वह सूत कातना नहीं जानती, पति को विश्वास नहीं हुआ। बल्कि उसने सोचा कि आलस्यवश वह ऐसी बात कह रही

(२५ वर्ष पूर्व चन्दामामा में प्रकाशित कहानी)

है ।

"मज़ाक रहने दो, मैं कहता हूँ तुम्हें रोज़ सूत कातना होगा । उसमें न बनने की क्या बात है ?" कहते हुए पति बाहर चला गया ।

कुछ परेशान होकर पत्नी ने चरखे के सामने बैठकर सूत कातने का प्रयत्न किया । पर चूँकि उसे सूत कातने का अभ्यास न था, धागा टूट जाता तो कहीं गाँठ पड़ जाती । उस दिन पति शाम को खेत से घर लौटा तो उसने देखा पत्नी ने बहुत कम सूत काता है । जो काता है उसकी ओर देखकर उसे बड़ा गुस्सा आया । पति ने पत्नी को डाँटा --

"क्या तुम मज़ाक कर रही हो ? अगर तुम ने ऐसा ही किया तो मैं तुम्हें छोड़कर किसी ऐसी औरत से शादी करूँगा जो अच्छी तरह सूत कातना जानती हो । सुनो, कल सुबह मैं शहर जा रहा हूँ । दस दिन बाद लौटूँगा । तब तक तुमने अगर ये टोकरी भर पूनियाँ नहीं कातीं तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा । फिर शिकायत मत करना । कह रखता हूँ ।"

पत्नी बड़ी चिंता में पड़ गई । क्यों कि अपने मायके में उसने कभी चरखा देखा तक नहीं था । ऐसी हालत में वह सूत क्या काते ? उसने पति के प्रदेश में सब औरतें सूत कातना जानती थीं । उसने सोचा कि अगर वह सूत न कातेगी तो उसकी घर में इज़्ज़त नहीं रहेगी । इसलिए अपने पति के शहर चले जाने के बाद वह भी घर से बाहर निकली और पासवाले एक चट्टान पर जा बैठी । वह सोचने लगी, आख़िर यह बला क्या आ पड़ी ? सोचा था कि हमारे जीवन के सारे दिन पहले ही जैसे सुख पूर्वक बीत जयेंगे, लेकिन यह समस्या कैसे हल होगी, इसी विचार में वह डूबी रही ।

कुछ समय बाद उसे कहीं से कुछ कुछ बातें और हँसी सुनाई दी । उसने चारों तरफ़ देखा तो कोई दिखाई नहीं दिया । फिर उसने बड़ी गौर से उन बातों को सुनने की कोशिश की तो उसे मालूम हुआ कि वे ध्वनियाँ किसी चट्टान के नीचे से आ रही हैं ।

कुछ सोचकर वह चट्टान से उतर पड़ी और बड़ी मुश्किल से उसने चट्टान को ढकेल दिया । उसे चट्टान के नीचे एक छोटा-सा सुरंग दिखाई दिया । साहस करके वह उस सुरंग में उतर पड़ी । उसे एक छोटासा कमरा दिख पड़ा, जिसमें छे नाटी औरतें बैठी हुई

थीं । वे देखने में पाँच साल की लड़कियों जैसी दिखाई देती थीं । उनके सामने खिलौने जैसे कुछ चरख़े रखे थे । ये लड़कियाँ हाथ में एक एक पूनी लेकर वायु-वेग से मकड़ी के जाले के धागे जैसा महीन धागा निकाल कर उनका ढेर लगा रही थीं । सूत कातने की उनकी कुशलता देख कर उस युवती को बड़ा विस्मय हुआ ।

एक और आश्चर्य उसने देखा उन सभी औरतों के चेहरे एक तरफ़ से टेढ़े थे । बड़ी तेज़ गति से धागा निकालते हुए भी वे आपस में हँसी-मज़ाक कर रही थीं ।

युवती ने उनसे पूछा- ''बहनों, मैं तो तुम्हें जानती नहीं । लेकिन सूत कातने की तुम्हारी कुशलता देखकर मुझे आश्चर्य लगता है । तुम्हारी इस कला का सौवाँ हिस्सा मेरे पास होता तो आज मुझे जो चिन्ता है वह न होती । उसने अपने पति की बात उनको सुनाई और वह रो पड़ी ।

उन छः औरतों ने अपने चरखों को रोका और पूछा- ''बहन, बताओ तो तुम्हें क्या तक़लीफ़ है ? हम तुम्हारी क्या मदद कर सकती हैं ?''

अपने पति की शर्त बताते हुए उसने कहा- ''अगर अपने पति के घर लौटने तक मैं टोकरी भर पूनियों से सूत न कात लूँ तो मेरी ख़ैर नहीं है । उसके बाद बस भगवान पर ही भरोसा'' चिन्तापूर्ण स्वर में युवती ने उत्तर दिया ।

स्त्रियाँ हँस पड़ीं और बोली- ''बस, इतनी-सी बात को लेकर तुम अपने को दुखी बना रही हो । तुम चिन्ता न करो, हम तुम्हारी पूनियाँ कात देंगी । जिस दिन तुम्हारे पति

लौटनेवाले हैं, उस दिन हम को बुलाना, हम आकर तुम्हारा काम पूरा कर देंगी । अब तुम फिक्र मत कर । मगर हाँ, एक शर्त है । हमारी सेवा के बदले में तुम्हें हमको एक जून खाना खिलाना पड़ेगा ।

युवती ने शर्त मंजूर की । पति के लौटने के दिन वे स्त्रियाँ युवती के घर पहुँच गईं । सभी पूनियों से पतला महीन धागा कात कर उसका ढेर लगा दिया । पति ने लौटकर उन टेढ़े चेहरोंवाली औरतों को देखा और पत्नी से पूछा-- "बताओ, ये कौन मेहमान आये हैं अपने घर में ?"

"ये हमारी पड़ोसिनें हैं । मेरी मदद करने के लिए आई हैं । आज मैंने इन्हें खाने के लिए बुलाया है ।" पत्नी ने जवाब दिया ।

अब सब लोग भोजन करने बैठे । पति ने देखा कि ये औरतें जब हँसती हैं, बात करती हैं, तो उनके चेहरे टेढ़े हो जाते हैं । उसने उनसे सवाल किया-- "बहनों, तुम सब के चेहरे एक तरफ़ टेढ़े लगते हैं । तुम ऐसे चेहरे लेकर ही पैदा हुईं या उनके टेढ़ेपन का कोई और कारण भी है ?"

"सुनो भैया, सुबह से शाम तक हम बराबर सूत कातने का काम करती हैं न ? इस मेहनत के कारण हमारा यह हाल हो गया है । अलावा इसके और कोई कारण हमारी तो समझ में नहीं आता ।" उन औरतों ने जवाब दिया ।

उन औरतों के चले जाने के बाद पति ने अपनी पत्नी के मुख की ओर बरीकी से देखा । वह उसे खूब सुंदर लगी । उसका गोल-मटोल चेहरा देखकर पति प्रसन्न हुआ ।

उसने अपनी पत्नी से कहा- "अरी, सुनो, आज तक तुमने जो सूत काता बस है । आइंदा तुम्हें सूत नहीं कातना चाहिए । कहीं तुम्हारा मुँह टेढ़ा न हो जाए ।" कहते हुए पति ने चरखा उठाया और उसे अटारी पर पटक आया । पत्नी को बड़ा संतोष हुआ-- बला टल गई ।

मास्करिन (साफिया पाल्य) टापुओं में स्थित ताड़वृक्षों में तथा अमेजोन प्रदेश के बाँस की जति के ताड़वृक्षों में बहुत ही बड़े बड़े पत्ते पाये जाते हैं ।
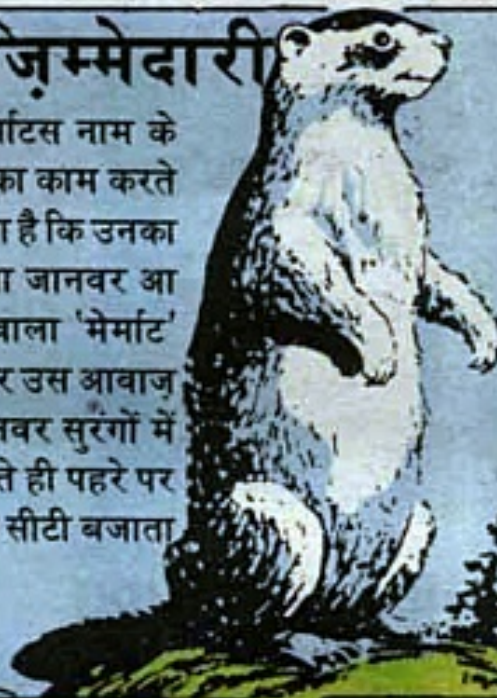
कहा जाता है कि गत ६०० मिलियन वर्षों में पृथ्वी तथा अन्य छोटे छोटे ग्रहों के बीच २००० दफे टकराहटें हुयी हैं ।

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार ५०)

पुरस्कृत परिचयोक्तियां मार्च १९८९ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

Subhash Sabnis

S. Kumar Sharma

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★ जनवरी १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) ५० रु. का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर निम्न पते पर भेजें : चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

नवम्बर के फोटो - परिणाम

प्रथम फोटो : पापी पेट का सवाल है !

द्वितीय फोटो : जीवन सचमुच एक जाल है !!

प्रेषक : राजेश्वर, क्वा नं : ३८१/१०, टाइप II, जी. सी. एफ़. स्टेट, जबलपुर - ४८२०११

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु. ३६-००

चन्दा भेजने का पता :

डॉल्टन एजेन्सीस, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास - ६०० ०२६

अन्य देशों के चन्दे सम्बन्धी विवरण के लिए निम्न पते पर लिखिये :

चन्दामामा पब्लिकेशन्स, चन्दामामा बिल्डिंग्स, वडपलनी, मद्रास - ६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISHWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

अपने शिशु को दीजिए सैरेलॅक का अनूठा लाभ

कीजिए ठोस आहार की आदर्श शुरूआत

6 महीने से

4 महीने से

6 महीने से

४ महीने की उम्र से आपके शिशु को दूध के साथ-साथ ठोस आहार की भी जरूरत होती है. उसे सैरेलॅक का अनूठा लाभ दीजिए.

पौष्टिकता का लाभ : सैरेलॅक का प्रत्येक आहार आपके शिशु की आवश्यकता के अनुसार सारे पौष्टिक तत्व प्रदान करता है — प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फैट, विटामिन तथा मिनरल, सभी पूरी तरह संतुलित.

स्वाद का लाभ : शिशुओं को सैरेलॅक का स्वाद बहुत भाता है.

समय का लाभ : सैरेलॅक पहले से ही पकाया हुआ है और इसमें दूध और चीनी मौजूद है. केवल इसे उबाले हुए गुनगुने पानी में मिला दीजिए.

पसंद का लाभ : तीन तरह के सैरेलॅक में से आप अपनी पसंद का चुन सकती है.

कृपया डिब्बे पर दिए गए निर्देशों का सावधानी से पालन कीजिए ताकि इसके बनाने में स्वच्छता रहे और आपके शिशु को संतुलित पोषाहार मिले.

मुफ्त! सैरेलॅक बेबी केयर बुक
लिखिये : सैरेलॅक, पोस्ट बॉक्स नं. 3
नई दिल्ली-110 008

सैरेलॅक का वादा : स्वाद भरा संपूर्ण पोषाहार

RK SWAMY/FSL/5112/HIN